मूल्य : 2.00 रुपया

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

जून-जुलाई-2015

बढ़ते कदम से जुड़ने के लिए निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :
बढ़ते-कदम
31, बेसमेंट, गौतम नगर
नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644470

बालकनामा

अंक-51 सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार

बढ़ते कदम संगठन के सड़क व कामकाजी बच्चों ने कानूनी नीतियों व योजनाओं के लिए दिए सुझाव

वैसे तो सरकार द्वारा हर साल बच्चों के लिए बहुत सारी कानूनी नीतियां और योजनाएं बनाई जाती हैं, लेकिन ये सब जमीनी हकीकत से परे कागजों तक ही सिमट कर रह जाती हैं। इसका कारण यह है कि ये नीतियां और कार्यक्रम उन बच्चों तक पहुंच ही नहीं पाते, जिन्हें इनकी आवश्यकता होती है। और हमारे नीति निर्माता इनको बनाने के बाद खुद को बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त कर लेते हैं। लेकिन हम सभी के लिए यह बहुत ही चिंता का विषय है कि जो बच्चे सड़कों व फुटपाथों पर अकेले रहकर जीवन यापन कर रहे हैं, उनके पास न तो कोई कानूनी सुविधाएं हैं और न ही उनके लिए इस प्रकार की कोई नीतियां बनाई गई हैं।

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए बढ़ते-कदम संगठन द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में कानूनी नीतियों व जरूरतों के बारे में अपनी बात रखते हुए 15 वर्षीय चंदन ने कहा कि बहुत से बच्चों को अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिए काम करना पड़ता है क्योंकि उनके माता पिता या तो वृद्ध हैं या शारीरिक रूप से विकलांग हैं। इस कारण बच्चों को काम के साथ अपने माता पिता का ख्याल भी रखना पड़ता है। इसलिए मैं चाहता हूं कि ऐसे बच्चों के लिए सरकार कोई ऐसा कानून या प्रावधान बनाए, जिससे उन बच्चों के परिवार को आर्थिक सहयोग पहुंचाया जा सके। इन बच्चों का सही विकास हो और इनके उज्ज्वल भविष्य की जिम्मेदारी ली जाए।

15 वर्षीय शंभू का मानना है कि हमें सड़क व कामकाजी बच्चों की कुशलता को बढ़ाना चाहिए। वैसे तो सरकार द्वारा बच्चों के लिए वोकेशनल ट्रेनिंग की सुविधाएं प्रदान की गई हैं पर उन वोकेशनल ट्रेनिंग में उन बच्चों को ही मौका मिल पाता है जो 10वीं या 12वीं पास होते हैं। इस कारण बहुत से बच्चे जो सड़कों पर रहकर अपनी गुजर बसर कर रहे हैं वो पीछे रह जाते हैं। हम सभी के लिए यह बड़े ही दुख की बात है कि शिक्षा के अभाव के कारण हम बच्चों को यह मौका नहीं मिल पाता। मैं चाहता हूं कि सरकार ऐसे बच्चों के लिए भी वोकेशनल ट्रेनिंग की सुविधाएं प्रदान करें जो दसवीं पास तो नहीं हैं लेकिन कुछ सीखना चाहते हैं।

15 वर्षीय धीरज ने कहा कि जो बच्चे नशा करते हैं उन बच्चों के लिए सरकार द्वारा अब तक कोई स्पेशल नाइट सेंटर नहीं बनवाएं गए हैं, जहां उन बच्चों को सभी सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। मैं चाहता हूं कि ऐसे बच्चों लिए स्पेशल नाइट सेंटरों का निर्माण किया जाए, जिसमें उन बच्चों की सुरक्षा व सुधार के लिए अलग अलग कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।

15 वर्षीय चांदनी ने कहा कि क्या हमारी सरकार ने कभी यह सोचा है कि बच्चे सड़कों पर कैसे और क्यों आ जाते हैं। क्योंकि इनमें से अधिकतर बच्चों के माता पिता के पास घर नहीं है, उनके के पास रोजगार नहीं है। वह अपने बच्चों का पेट भरने के लिए इधर उधर काम करते हैं और रैन बसेरों व फुटपाथ पर आकर रहने लग जाते हैं। हम बच्चे चाहते हैं कि

इस समस्या से बच्चों को दूर रखने के लिए सरकार को चाहिए कि बच्चों के विकास के लिए और उनके जीवन को सुधारने के लिए उनके माता पिता को रोजगार दिया जाए, जिससे वह अपने बच्चों से काम ना करवाएं।

13 वर्षीय अभिषेक ने कहा कि जो बच्चे अनाथ हैं और वह अपने किसी रिश्तेदार के साथ रहते हैं। ऐसे में बच्चे उन्हें छोड़कर सेंटर होम नहीं जाना चाहते तो सरकार को चाहिए कि कोई ऐसा कानून या प्रावधान हो जिससे बच्चों को वहीं पर रहकर आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाए, और उनकी शिक्षा हेतु पूरी जिम्मेदारी ली जाए। ताकि बच्चे को अपना जीवन जीने के लिए काम ना करना पड़े।

16 वर्षीय पूनम ने कहा कि सन् 2015 में जो हमारी सरकार ने एक नया कानून बनाया है कि 14 साल का बच्चा अब काम कर सकता है बशर्ते उसे आधे दिन पढ़ाई करनी है। लेकिन अगर किसी बच्चे के माता पिता अपने बच्चे को पढ़ने नहीं देना चाहते हैं और इस कानून का फायदा उठाकर उससे काम करवा रहे हैं, तो ऐसे बच्चे का तो पूरी तरह से शोषण किया जाएगा। ऐसी परिस्थिति में उस बच्चे की जिम्मेदारी कौन लेगा। मैं चाहती हूं कि हम बच्चों की सुरक्षा हेतु सरकार द्वारा कोई ऐसा कानून बनाया जाए, जिसमें बच्चे की सही परवरिश व शिक्षा की पूरी जिम्मेदारी ली जाए और उस कानून का कोई गलत फायदा ना उठा सके।

16 वर्षीय आकाश ने कहा कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों के बारे में अब तक किसी को नहीं पता कि हमारे समाज में उनकी कितनी संख्या है मैं तो सरकार से यह अपील करना चाहता हूं कि हमारी सरकार द्वारा यह कार्य प्रणाली में लाया जाए कि हम सड़क एवं कामाकजी बच्चों के लिए एक अलग से टीम बनाई जाए। जिसमें हम बच्चों का सर्वे किया जाए तथा हम बच्चों को भी गिनती में लाया जाए। ताकि सरकार सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए उनके हिसाब से योजना या कानून बना सके और उसे लागू कर सके।

-शन्नो (19 वर्ष)

बढ़ते कदम संगठन के सलाहकार को लंदन से मिला बुलावा
अंतर्राष्ट्रीय मीटिंग में रखेंगे बच्चों की राय

साथियों, बढ़ते कदम संगठन के सभी सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए यह बहुत ही खुशी की बात है कि संगठन के सलाहकर विजय कुमार को लंदन से सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए आयोजित मीटिंग में भाग लेने का आमंत्रण आया है। ज्ञातव्य हो कि यह बैठक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए क्या कानूनी नीतियां व योजनाएं होनी चाहिए, इस पर आयोजित की जा रही है। इस बैठक में बढ़ते कदम संगठन की ओर से सलाहकार विजय कुमार कानूनी नीतियों व कार्यक्रमों पर सदस्यों द्वारा दिए गए इन सुझावों व विचारों को रखेंगे।

सड़क व कामकाजी बच्चों ने दिल्ली सरकार से मांगें 45 करोड़ रुपए

तव्य हो कि दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी ने दिल्ली वासियों से बजट बनाने में मदद हेतु सुझाव मांगे थे। जिसके चलते ''बढ़ते कदम'' सड़क व कामकाजी बच्चों का एक संगठन है, जो सामाजिक संस्था चेतना द्वारा पोषित है। इस संगठन द्वारा सड़क व कामकाजी बच्चों के बजट पर चर्चा करने हेतु संगठन के सदस्यों की एक बैठक बुलाई गई। इस बैठक में संगठन के सभी सदस्यों ने चर्चा करके दिल्ली सरकार को सुझाव देने हेतु 45 करोड़ रूपए एक बजट बनाया और मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल

शेष पृष्ठ 2 पर

संपादकीय

संपादकीय
प्यारे साथियों,

एक बार हम फिर से आपके बीच अपना अखबार लेकर उपस्थित हुए हैं। साथियों, जैसा कि आप जानते हैं कि हम हर बार सड़क व कामकाजी बच्चों से जुड़े कुछ अहम मुद्दों व जानकारियों को आप तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं। इस बार भी हमने सड़क व कामकाजी बच्चों से कानूनी नीतियों व योजनाओं जैसे- किशोर न्याय अधिनियम, बाल विवाह व बाल श्रम निषेध कानून, राइट टू एजूकेशन, पॉक्सो इत्यादि के बारे में बात की। उनके विचार जानें और यह जानने का प्रयास किया कि आखिर क्या कारण है कि बच्चों तक ये कानूनी नीतियां और सुविधाएं नहीं पहुंच पा रही है।

इसके साथ ही आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि बढ़ते कदम संगठन के सदस्य समुदायों, झुग्गी झोपड़ियों, स्टेशनों व फुटपाथों पर रहने व काम करने वाले बच्चों को स्कूल जाने के लिए जागरूक कर रहे हैं। ये सभी बाल साथी बच्चों के साथ साथ उनके माता पिता को भी इन बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। बाल साथियों के इस प्रयास से बहुत से बच्चों का स्कूल में दाखिला भी हो गया है।

इस प्रकार सड़क व कामकाजी बच्चों से जुड़ी बहुत सारी समस्याओं व जानकारियों के साथ हमारा यह अखबार बालकनामा प्रकाशित हुआ है। हमें आशा है कि हमेशा की तरह इस बार भी आपको यह अंक अवश्य पसंद आएगा।

पिछले छह महीने से हम यह अखबार विभिन्न दूतावासों (एम्बेसी) में भेज रहे हैं।

यदि इस अखबार से जुड़ा कोई अनुभव या सुझाव आप हमारे साथ बांटना चाहते हों तो ऊपर दिए गए पते पर संपर्क करें।

-संपादकीय टीम

बालश्रम की यह कैसी परिभाषा?

तोता : उड़ते-उड़ते एक पेड़ की डाली पर बैठ जाता है और मैना से कहता है कि और सुनाओ मैना क्या खबर है...?

मैना : खबर क्या सुनाऊं तोता... कुछ समझ में ही नहीं आ रहा...?

तोता : क्यों...क्या हुआ मैना...? तुम बहुत उदास लग रही हो...

मैना : हां तोता...बात ही कुछ ऐसी है कि मैं बहुत परेशान हूं...

तोता : बताओ तो सही कि आखिर बात क्या है..?

मैना : तुम्हें पता है तोता... सरकार ने यह अनुमति दे दी है कि 14 साल की उम्र का कोई भी बच्चा किसी भी प्रकार का काम कर सकता है और कानून के तहत यदि कोई भी बच्चा, जो बाल श्रम कर रहा है या उससे बाल श्रम करवाया जा रहा है, उस पर कोई कानूनी प्रक्रिया नहीं की जा सकती....यानि कि अब कोई भी बच्चा जो 14 साल का है, उससे बिना किसी भय के जबरन काम करवाया जा सकता है...

तोता : पर मैना...सरकार ऐसा कैसे कर सकती है.... भारत सरकार ने तो स्वयं भी 1989 में यूनाईटेड नेशन कन्वेंशन ऑफ चाइल्ड राइट्स (यूएनसीआरसी) को माना है, जिसके तहत बाल हित सर्वोपरी माना गया है। और यदि कोई 14 साल का बच्चा काम करता है तो यह उसके लिए उचित नहीं होगा...

मैना : हां तोता... सोचने वाली बात है कि जब सख्त कानून के चलते इन बच्चों से इतना काम करवाया जा रहा है, जिसके कारण देश में बाल श्रमिकों की संख्या बढ़ती जा रही है तो बिना कानूनी हस्तक्षेप के कितने बच्चों को बाल मजदूरी व बंधुआ मजदूरी का शिकार होना पड़ेगा।

तोता : हां मैना...लेकिन क्या तुमने इस विषय पर बढ़ते कदम के बाल साथियों से बात की... उनकी इस विषय पर क्या राय है...?

मैना : नहीं तोता... पर चलो हम उनसे चलकर मिलते हैं और उनके विचार जानते हैं...

(तोता मैना उड़कर बढ़ते कदम

शेष पृष्ठ 2 पर

सड़क व कामकाजी बच्चों ने नेपाल पीड़ितों के लिए इकट्ठा किए आठ हजार रूपए

दिल्ली में कार्यरत बढ़ते कदम (सड़क व कामकाजी बच्चों के संगठन) के बच्चों ने एक बार फिर से संगठित होकर नेपाल भूकंप पीड़ितों के लिए पैसा इकट्ठा किया। संगठन के सदस्य लाजपत नगर और सरोजनी नगर मार्केट में घूमें और बच्चों व राहगीरों से पैसा इकट्ठा किया। बाल साथियों ने आठ हजार रूपए इकट्ठा किए और नेपाल भूपंक पीड़ित बच्चों की मदद के लिए उसे प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा करवाया। लोग उनके साहस को देखकर आश्चर्यचकित थे और उनका हौसला बढ़ाने के लिए आगे भी आए।

14 वर्ष की कबाड़ा बीनने वाली शमा (परिवर्तित नाम) ने अपनी रोज की कमाई से दस रूपए दान किए। उसने कहा कि मुझे पता है जब भूपंक आया था।

संगठन की राष्ट्रीय सचिव 17 साल की चांदनी ने कहा कि आश्चर्य की बात तो यह है कि हाई प्रोफाइल लोगों से अधिक तो सड़क पर रहने वाले लोग सहयोग कर रहे थे, क्योंकि दुकानदारों से अधिक तो सड़क पर रहने वाले बच्चे इस स्थिति से जुड़े नजर आए।

चाय बेचने वाली 10 वर्ष की उस्माना (परिवर्तित नाम) पांच रूपए देते हुए कहा कि नेपाल के मेरे बहुत से साथी हैं। वे सुबह कार साफ करने के लिए आते हैं। उसने बताया कि मैंने उनसे नेपाल के बारे में सुना था।

बालनामा के रिपोर्टर 16 वर्ष के शंभू ने कहा कि हम अभी और पैसा इकट्ठा करेंगे और 10,000 तक की धनराशि प्राधनमंत्री राहत कोष में जमा करेंगे।

चांदनी ने कहा कि इससे पहले भी हम ऐसा कर चुके हैं। हमने जम्मू कश्मीर बाढ़ पीड़ितों के लिए अपनी पेंटिंग बेचकर 50,000 रूपए और उत्तराखंड बाढ़ पीड़ितों के लिए 20,000 रूपए इकट्ठा कर प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा किए थे।

चेतना के निदेशक श्री संजय गुप्ता ने कहा कि बच्चों का यह प्रयास बहुत ही प्रेरणादायक है। हम नेपाल से विशेष तौर से जुड़े हुए हैं और बहुत से बच्चे ऐसी प्राकृतिक आपदाओं के चलते तस्करी का शिकार होकर यहां आ जाते हैं। हम दिल्लीवासियों को इन बच्चों से प्रेरणा लेनी चाहिए और खुले दिल से इसमें उनका योगदान करना चाहिए। **-शंभू (16 वर्ष)**

समस्याओं का सामना और सुरक्षा का अभाव

पश्चिमी दिल्ली जिले में ऐसे कई कस्बें और बस्तियां हैं, जहां लोग छोटी छोटी झुग्गी झोपड़ी डालकर रहते हैं और ऐसी बहुत सी जगह हैं जहां रेल की पटरियों का निकास हो रहा है। इन जगहों में रहने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है। रेल की पटरी के किनारे लोगों के घर बने हुए हैं और वे पूरे परिवार के साथ वहां रहते हैं और आस पास की जगहों पर काम करने जाते हैं।

इन लोगों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। इसलिए इनके घरों में बड़ों के साथ साथ छोटे बच्चे भी काम करने के लिए जाते हैं। ये बच्चे खासकर लड़कियां जिन स्थानों पर काम करने जाती हैं वहां का माहौल उनकी सुरक्षा की दृष्टि से बहुत खराब है।

ये लड़कियां जब अपने घरों से निकलती हैं तो उन्हें हमेशा इस बात का डर लगा रहता है कि कहीं कोई उनके साथ गलत हरकत ना कर बैठे। यही नहीं आए दिन यह बात सुनने में भी आती है कि इस लड़की को आज कोई उठाकर ले गया या उसे अपनी हवस का शिकार बनाकर छोड़कर भाग गया।

इस बारे में जब बढ़ते कदम के सदस्य ने वहां पर रहने वाली लड़कियों से बात की, कि वह स्कूल पढ़ने क्यों नहीं जाती या दाखिला लेकर क्यों नहीं पढ़ाई करती तो वह कहती हैं कि हमारे माता पिता हमें पढ़ने को मना करते हैं क्योंकि जब हम काम करने के लिए जाते हैं तो हमारे आस पास समाज में रहने वाले लड़के ही हमसे छेड़छाड़ करते हैं और हमें देखकर गंदी गंदी बातें करते हैं। इसलिए हमारे माता पिता कहते हैं कि हम उनके साथ ही काम पर जाएं और काम करें, जिससे घर में दो पैसे आएं।

जब बढ़ते कदम के सदस्यों ने इस बारे में वहां के रहने वाले लोगों से बात की तो उन्होंने इस विषय में बात करने से मना कर दिया और कहा कि लड़कियों के साथ हो रहे ऐसे गंदे और घिनौने अपराध करने वालों की ओर कोई भी सख्त कार्यवाही नहीं की जाती, जिससे यह लोग समाज में इस तरह की हरकत न करें।

वहां रहने वाली लड़कियों ने कहा कि अगर इसी तरह से हम सभी इस मुद्दे को अनदेखा करते रहे तो लोग इस तरह के अपराध करते रहेंगे। हम चाहते हैं कि हमारी सुरक्षा हो ताकि हम अपने समाज में सिर उठाकर चल सकें और खुलकर रह सकें।

हम चाहते हैं कि हमारे लिए हर कॉलोनियों, बस्तियों में पुलिस अधिकारियों को रखा जाए, जिससे हम लड़कियों की सुरक्षा हो सके। हमें कहीं भी आने जाने में दिक्कत ना हो। हम लड़कियां आज इस डर की वजह से ही स्कूल की पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाती। जब तक हम कक्षा पांच और सात में पढ़ते हैं तब तक तो हमारे माता पिता हमें पढ़ाते हैं, लेकिन जैसे ही हम चौदह, पन्द्रह साल में प्रवेश करते हैं वैसे ही हमारी पढ़ाई रूकवा दी जाती है।

इस तरह हम पढ़ नहीं पाते। हमारे माता पिता हमें काम करने के लिए कहते हैं या फिर हमारी शादी करवा देते हैं। ऐसी कितनी ही लड़कियां हैं जो इस सुरक्षा के अभाव के कारण ही अपनी शिक्षा से दूर हो जाती हैं और काम करने लगती हैं।

-चांदनी (15 वर्ष)

घरों में धड़ल्ले से किया जा रहा है नशीले पदार्थों का व्यापार

आप सभी जानते हैं कि व्हाइटनर का उपयोग लिखने के बाद कुछ गलती हो जाने पर उसे मिटाने में किया जाता है। लेकिन इसका सबसे ज़्यादा उपयोग बच्चे नशे के रूप में करते हैं। यह पदार्थ नशे के रूप में बच्चों को अपनी चपेट में ले रहा है।

बच्चे धीरे धीरे इस व्हाइटनर के शिकार होते जा रहे हैं। यदि आप सड़क व स्टेशन पर रहने वाले बच्चों से पूछो तो वे कहते हैं कि इसके बिना वो जी नहीं सकते क्योंकि ये बच्चे इस नशे का उपयोग अपनी भूख मारने के लिए करते हैं।

कोई उन्हें यह नशा छोड़ने के लिए चाहे कितना ही डांटे या मारे लेकिन वे इसे नहीं छोड़ सकते। यदि वह इसे छोड़ना भी चाहें तो उनका शरीर उनका साथ नहीं देता और उनके शरीर में टूटन होने लगती है। उन्हें दर्द होता है, काम में मन नहीं लगता और यह बच्चे इसको सूंघने के लिए विचलित हो उठते हैं।

दिल्ली जैसे शहर में बहुत संख्या में बच्चे शराब और गांजे का भी सेवन कर रहे हैं जो इन्हें बड़ी ही आसानी से किसी भी दुकान पर मिल जाता है। ऐसे लोग नशा को बेचने के साथ साथ बच्चों को अपने घरों में बैठाकर नशीले पदार्थों का सेवन भी करवाते हैं।

अब तक तो यह नशीले पदार्थ दुकानों पर ही मिला करते थे, लेकिन अब इन नशीले पदार्थों का व्यापार घरों में भी किया जा रहा है। जहां रोज़ 300 से भी अधिक बच्चे नशीले पदार्थ लेने जाते हैं और जो लोग इसका व्यापार कर रहे हैं वह इन बच्चों को अपने घरों में बैठाकर उन्हें नशीले पदार्थों का सेवन करवाते हैं।

बढ़ते कदम के सदस्यों ने जब इस बात का पता लगाने के लिए दिल्ली के बच्चों से बातचीत की तो उन्होंने बताया कि ऐसी बहुत सी जगह हैं जहां घरों में बच्चों को बैठाकर नशा करवाया जाता है और उनको यह पदार्थ बेचा जाता है।

बच्चों ने हमें बताया कि उन्हें गांजे की एक पुड़िया 20 रूपये में मिलती है और शराब की थैली भी 20 रूपये में मिल जाती है। इस तरह बच्चों को घरों से नशा सस्ते दामों पर और आसानी से उपलब्ध हो जाता है। यह जानने के बाद बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने बच्चों से कहा कि वह उस जगह जाकर देखना चाहते हैं जहां बच्चों को नशा बेचा और करवाया जा रहा है। तो बच्चों ने कहा कि वह जगह खतरे से खाली नहीं है। वहां दिन दहाड़े भी व्यक्ति को मार पीट के फेंक दिया जाता है और ऐसे केस तो वहां आए दिन होते रहते हैं और कहा कि वह इलाका लड़कियों के लिए और भी खतरनाक है। उस जगह से लड़की का सुरक्षित निकलना बिल्कुल भी संभव नहीं है। वह एकदम सूनसान जगह है। जहां कोई नहीं जाता। वहां पर सिर्फ वही लोग व बच्चे जाते हैं जो नशीले पदार्थों को खरीदते हैं और उनके घर जाकर नशा करते हैं।

दिल्ली जैसे शहर में इस प्रकार बेधड़क होकर नशे का व्यापार करने वाले लोगों के लिए हम बढ़ते कदम के सदस्य भारत सरकार से यह अपील करना चाहते हैं कि इन नशीले पदार्थों का व्यापार घरों में करने वाले लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए और उन्हें यह चेतावनी दी जाए कि वह इस तरह का कार्य ना करें, जिससे छोटे छोटे बच्चों की जिंदगी बर्बाद हो जाए और नशा करने वाले बच्चों की संख्या बढ़ती जाए।

अगर हमारी सरकार इसी तरह चुप रही और इन बच्चों के लिए कुछ नहीं किया तो हमारे देश में अपराधों की संख्या बढ़ती ही जाएगी और भारी संख्या में बच्चे इस दलदल में फंसते ही चले जाएंगे। इससे बच्चों का भविष्य नष्ट हो जाएगा । हमें अपनी भारत सरकार से पूरी आशा है कि वह हमारी बातों को गंभीरता से लेगी और हम बच्चों की भलाई के लिए कुछ कदम अवश्य उठाएगी।

-चांदनी (15 वर्ष)

पृष्ठ 1 का शेष **तोता मैना....**

के बाल साथियों से मिलते हैं और उनसे बातचीत करते हैं)

तोता : चांदनी दीदी क्या आपको पता है कि सरकार ने 14 साल के बच्चों से काम करवाने को सही ठहराया है और कहा है कि 14 साल की उम्र का कोई भी बच्चा काम कर सकता है...?

चांदनी : हां तोता...यह जो कुछ भी हम बच्चों के लिए किया जा रहा है, वह बिलकुल भी सही नहीं है। इससे जो माता पिता, व्यापारी और दुकानदार बच्चों से जबरन काम करवाते थे, उन्हें और बल मिलेगा और अब तो वे बिना किसी भय के इन बच्चों से कम पैसों में बड़ी आसानी से अपना काम करवा लेंगे।

मैना : हां तोता... चांदनी दीदी ने एकदम सही कहा... इससे सड़क व कामकाजी बच्चों को बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा... चलो इस बारे में विकास भैया का क्या कहना है उनसे भी जान लेते हैं...

विकास : मैना ये तो हम बच्चों के साथ बहुत ही गलत हो रहा है... एक तो वैसे भी सरकार हम बच्चों के लिए कुछ अच्छा नहीं करती और जो कुछ हमारे हित में है उसे भी हमसे छीनना चाह रही है... यदि बाल श्रमिकों की उम्र 14 साल कर दी गई तो हम बच्चे क्या करेंगे...

तोता : ज्योति दीदी ने भी इस विषय पर हमें बताया कि बाल श्रम की उम्र 16 से 18 साल ही होनी चाहिए क्योंकि 18 साल के बाद ही हम बच्चों को सही गलत की परख होती है... लेकिन यदि उम्र घटाकर 14 साल कर दी जाएगी तो हम बच्चों का जीवन काम के बोझ के तले दब जाएगा और इससे केवल हमारा ही नुकसान होगा, सरकार का नहीं...

मैना : ज्योति दीदी ने जो बात कही वो बिल्कुल सही कही कि बाल श्रम की उम्र घटाने से बच्चों का भविष्य खतरे में चला जाएगा...

मैना : हां तोता... प्रस्तावित अधिनियम में बच्चे की उम्र घटाकर 14 साल मान लेना न्याय संगत नहीं होगा, क्योंकि इससे देश में बाल श्रमिकों की संख्या बढ़ेगी। ऐसे में बच्चों को स्कूल भेजने की बजाए, उन्हें काम पर भेजा जाएगा और उनके हाथों में पेन की जगह फावड़ा होगा। सरकार इन बच्चों के साथ जो भी कर रही है, वह उचित नहीं है और इससे देश का भविष्य खतरे में पड़ सकता है।

इतना कहकर खबरों के माहिर खबरची तोता-मैना दूसरी खबर की तलाश में उड़ पड़ते हैं।

पृष्ठ 1 का शेष **सड़क व कामकाजी बच्चों ने दिल्ली सरकार से मांगें 45 करोड़ रुपए**

जी को फैक्स के माध्यम से एक पत्र लिखकर भेजा।

इस पत्र के माध्यम से संगठन के सदस्यों ने सड़क व कामकाजी बच्चों के बजट में निम्न मुद्दों व सुझावों को शामिल किया है :-

* सड़क व कामकजी बच्चों की दिल्ली के ग्यारह जिलों में जनसंख्या एवं स्थिति सर्वे करने हेतु एक टीम बनाई जाए। ताकि टीम द्वारा स्थिति का जायजा लेने के बाद बेहतर भविष्यगत योजनाएं बनाई जा सकें। जिसका खर्च लगभग एक करोड़ रूपए होगा।

* दिल्ली में सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए लगभग 100 शेल्टर होम की व्यवस्था हो। जिसमें एक शेल्टर होम में लगभग 50 से 100 बच्चे रह सकें। जिसमें एक बच्चे का मासिक खर्च लगभग तीन हजार रूपए होगा। इस प्रकार शेल्टर होम का खर्च 36 करोड़ रूपए होगा।

* सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए लगभग चार वोकेशनल इंस्टीट्यूट हों, जिसमें प्रत्येक में 100 बच्चों की रूचि के अनुसार उन्हें ट्रेनिंग दी जाए। जिसका प्रति बच्चा (17 साल से अधिक) मासिक खर्च 3000 रूपए होगा। इस प्रकार चार वोकेशनल इंस्टीट्यूट का खर्च 4 करोड़ 44 लाख रूपए होगा।

* सड़क पर रहने वाली लड़कियों की सुरक्षा के लिए दिल्ली के लगभग 20 थाना क्षेत्रों में दो दो महिला पुलिसकर्मी या काउंसलर की एक टीम नियुक्त की जाए। जिसका बजट लगभग एक करोड़ रूपए होगा।

* सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए दिल्ली के लगभग दस अस्पतालों में दो डॉक्टर और चार बेड सुनिश्चित किए जाएं, जिसका अनुमानत: बजट चार करोड़ रूपए होगा।

* बेघर बच्चों को पढ़ाने हेतु दस चल विद्यालयों की शुरूआत की जाए। जिसका संचालन स्वयं सेवी संस्था के कार्यकर्ता व शिक्षा विभाग मिलकर करें और इसमें डीटीसी की बस भी शामिल की जाएं। प्रत्येक चल विद्यालय का मासिक खर्च एक लाख रूपए होगा और कुल बजट 1 करोड़ 20 लाख रूपए होगा।

बढ़ते कदम संगठन की राष्ट्रीय सचिव चांदनी ने कहा कि हम सभी सदस्यों ने गहन चर्चा के बाद यह बजट बनाया है और हमें उम्मीद है कि मुख्यमंत्री जी इस बजट को गंभीरता से लेंगे और इस पर जल्द कोई कार्यवाही करेंगे।

चेतना संस्था के निदेशक व बढ़ते कदम संगठन के पोषक श्री संजय गुप्ता जी ने बताया कि यह बाल साथियों द्वारा किया गया बहुत ही अच्छा प्रयास है। मेरे विचार से इन बाल सदस्यों ने जिन मुद्दों व सुझावों को अपने बजट में शामिल किया है, सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए इनको अपने बजट में शामिल करना बहुत ही आवश्यक है और दिल्ली के मुख्यमंत्री जी को इसे बजट में अवश्य शामिल करना चाहिए।

-शन्नो (19 वर्षों)

साथ छूटा लेकिन हिम्मत की डोर नहीं

15 वर्षीय कुमकुम अपने परिवार के साथ गांव में रहती थी। कुमकुम की तीन बहनें है। इसके पिता चिनाई का काम करते थे और वह गांव में बहुत खुश थे। लेकिन कुछ साल पहले कुमकुम की माता उनको छोड़कर चली गई। तब से गांव में रहने वाले लोग उन्हें ताना देते कि उनकी मां उन्हें छोड़कर इसलिए भाग गई क्योंकि वह हिन्दू थी और पिता मुसलमान। इस वजह से उन्हें लोग गलत निगाहों से देखते और भला बुरा कहते थे। कुमकुम की माता के जाने के बाद उसके पिता ने अपना काम धंधा छोड़ दिया और वह शराब पीने लगे। फिर कुछ दिनों के बाद ही वह गांव से दिल्ली में निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर आ गए और वहां आकर रहने लगे।

यहां आने के बाद कुमकुम कबाड़ा बीनने का काम करने लगी, ताकि वह अपनी तीन बहनों का पालन पोषण कर सकें। क्योंकि उसके पिता इधर उधर शराब पीते रहते थे और कुछ काम भी नहीं करते थे, जिससे वह अपने बच्चों का पेट भर सकें। इस परेशानी की वजह से वह कालका जी मंदिर में रहने लगी। जब से कुमकुम की माता उसे छोड़ कर गई हैं, तब से उस पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। क्योंकि वह अकेले ही अपनी तीनों बहनों का पालन पोषण करती है और उनका खर्चा उठाती है। इतनी समस्याओं से गुजरने के बाद भी कुमकुम ने ऐसे बहुत से बहादुरी के कारनामे किए हैं कि उसकी जितनी भी तारीफ की जाए वो कम है।

कुमकुम अपने ही नहीं, बल्कि दूसरे बच्चों से भी बहुत प्यार करती है तथा उनकी मदद भी करती है। बढ़ते कदम की बाल रिपोर्टर 15 वर्षीय ज्योति जब कुमकुम से मिली और उसके बारे में जाना तो कुमकुम ने बताया कि वह कालका जी मंदिर के पीछे रहती है। जहां एक बहुत गहरा पानी का गड्ढा है और उस गड्ढे की वजह से वहां गहरा दलदल जैसा हो गया है। उसने बताया कि मैंने उस गड्ढे में डूब रहे अब तक दो बच्चों की जानें बचाई हैं। कुमकुम ने 12 वर्षीय प्रियंका की जान बचाई और जब कुमकुम ने उससे पूछा कि वह कैसे गिर गई थी तो पूछने पर उसने बताया कि वह कुछ बच्चों के साथ वहां खेलने आई थी इस तरह वह सभी के साथ खेलते ही खेलते अचानक पैर फिसलने के कारण उस पानी के गढ्ढे में गिर पड़ी। जैसे ही वह उस पानी में गिरी तो उसके चिल्लाने की आवाज़ सुनकर कुमकुम वहां पहुंची और उसे उस गड्ढे से बाहर निकाला। इस तरह प्रियंका की जान बच गई।

उसके कुछ ही महीनों बाद 10 वर्षीय अर्जुन भी उस पानी में गिर गया और उसकी जान भी कुमकुम ने बचाई। कुमकुम बच्चों से बहुत प्यार करती है और वह बच्चों को कभी भी किसी मुसीबत में नहीं देख सकती क्योंकि उसने बचपन से ही दुख सहा है। इसलिए कुमकुम चाहती है कि दूसरे बच्चों को कभी भी कोई तकलीफ ना हो तथा वह हमेशा सभी बच्चों को खुश देखना चाहती है।

-ज्योति (15 वर्ष)

बढ़ते कदम संगठन के बाल साथी की मदद से बच्चों को मिला आश्रय

14 वर्षीय रूस्तम बढ़ते कदम का सदस्य है। वह रैन बसेरे में रहता है और रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने का काम करता है। एक दिन रूस्तम कबाड़ा बीनने का काम करने के बाद खाना खाने के लिए जा रहा था। जाते समय रूस्तम को रेलवे स्टेशन पर तीन छोटे छोटे बच्चे दिखाई पड़े तो वह उन बच्चों के पास गया और उनसे पूछा कि वह रेलवे स्टेशन पर कैसे और कहां से आए हैं तो उन बाल साथियों ने बताया कि वह बिहार से आए हैं।

यह जानने के बाद रूस्तम ने उनसे कहा कि वह स्टेशन पर क्या कर रहें है?तो उन बच्चों ने कहा कि हम कहां जाएं कहां रहें, इसलिए स्टेशन पर आ गए। उसके बाद रूस्तम उन्हें अपने साथ रैन बसेरे में ले गया और बालकनामा की रिपोर्टर 15 वर्षीय ज्योति से मिलवाया। फिर ज्योति ने उन तीनों बच्चों से बात की और उनसे पूछा कि वह अपने घर से दिल्ली क्यों आएं हैं।

बच्चों ने बताया कि वह बिहार से आए हैं और वह अपने घर बिहार नहीं जाना चाहते। यह सुनते ही ज्योति ने कहा कि तुम अपना घर छोड़कर क्यों आए हो। घर छोड़ने का क्या कारण है?तो बच्चों ने कहा कि घर में हमारे माता पिता बहुत मारते पीटते हैं। इस वजह से हम अपने घर से भाग कर दिल्ली आ गए हैं ताकि हम अपने घर वापस ना जा सकें।

यह सब सुनने के बाद ज्योति उन्हें चेतना संस्था द्वारा निजामुद्दीन में संचालित हार्म रिडक्शन सेंटर लेकर गई और चेतना संस्था के कार्यकर्ता से मिलवाया। फिर उन्होंने उन बच्चों से बात की। उनसे पूछा कि वह अपने घर जाना चाहते हैं या होम जाना चाहते हैं। तो बच्चों ने अपने घर जाने से मना किर दिया और कहा कि वह होम में ही जाना चाहते हैं। जहां उन्हें कोई भी मारे पीटे ना तथा उनसे प्यार से बात करें और उन्हें समझे, उनका ख्याल रखे।

कार्यकर्ता ने उन बच्चों से कहा कि आप अगर होम में जाना चाहते हो तो आपको होम में भेज दिया जाएगा। जहां आप अच्छे से रह सकोगे, अच्छे से पढ़ाई लिखाई करोगे और अच्छी आदतें सीखोगे। बच्चों को होम के बारे में जानकारी देने के बाद उन बच्चों को होम भेज दिया गया।

कार्यकर्ता ने बढ़ते कदम के सदस्य रूस्तम और ज्योति का धन्यवाद दिया, क्योंकि इन दोनों ने तीन बच्चों को स्टेशन की ज़िन्दगी जीने से बचा लिया और होम में भेजकर एक अच्छा काम किया, जहां उनकी अच्छे से देखरेख की जाएगी और उन्हें शिक्षा भी प्रदान की जाएगी।

-ज्योति (15 वर्ष)

बाल विवाह के खिलाफ यूथ की आवाज़ में बच्चे हुए शामिल

दिल्ली की हॉट डांस फॉर लाइफ संस्था द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का विषय ''नॉट सो यंग'' था। यह कार्यक्रम बाल विवाह पर आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में अलग अलग संस्थाओं और संगठनों से आए बच्चों व बढ़ते कदम के बाल सदस्यों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मशहूर कोरियोग्राफर श्री टेरेंस लेविस थे। इन्होंने बच्चों के कार्यक्रम में आकर उनका उत्साह बढ़ाया और उनके बीच शामिल होकर इस कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए। इस अवसर पर आए हुए सभी बाल साथियों ने बाल विवाह पर नुक्कड़ नाटक और डांस के माध्यम से समाज में रह रहीं लड़कियों की सुरक्षा और समस्याओं के प्रति आए हुए अतिथिगणों को परिचित कराया। बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रमों को देखकर श्री टेरेंस लेविस बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि इतने छोटे बच्चे कितनी हिम्मत के साथ अपनी बातों व समस्याओं को अलग अलग माध्यमों से हमारे सामने रख रहे हैं और हमें जानकारी दे रहे हैं।

श्री टेरेंस लेविस को इन बाल साथियों की पेशकस देखकर अपना बचपन याद आ गया। उन्होंने बताया कि जब वह छोटे थे तो इसी तरह डांस किया करते थे और कहा कि आज इन बच्चों के अन्दर इतना उत्साह देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। जो भी संस्थाएं इन बच्चों के लिए कार्य कर रही हैं वो बहुत अच्छा कार्य कर रही हैं। इस प्रकार इन बच्चों को आगे आने का मौका मिल रहा है।

शहरों और गांवों में बच्चों पर शोषण व अत्याचार के मुद्दे पर भी श्री टेरेंस लेविस ने बच्चों के साथ बातचीत की और बहुत से अहम पहलुओं के बारे उन्हें जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ज़्यादातर गांवों में बाल विवाह हो रहे हैं, जिसमें 18 साल से कम उम्र के लड़के व लड़कियों का विवाह करा दिया जाता है। जब कि विवाह करने की लड़के की सही उम्र 21 साल है और लड़की की 18 साल।

लेकिन अभी भी हमारे समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपनी पुरानी प्रथाओं से जुड़े हुए हैं और अपने बच्चों का विवाह कम उम्र में ही करवा देते हैं। लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि ऐसे विवाह करने के बाद उनके बच्चों को कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इस बाल विवाह को समाज में होने से रोकने के लिए श्री टेरेंस लेविस ने सभी बच्चों और बड़ों से कहा कि आजकल सभी का अकाउन्ट फेस बुक पर होता है। जिन लोगों का अकाउन्ट फेस बुक पर है वह हमारे साथ जुड़ें और बाल विवाह को खत्म करने की सोच लोगों में पैदा करें। जिससे समाज में रहने वाले ज़्यादा से ज़्यादा बच्चे सुरक्षित हो सकें। इसके साथ ही उन्होंने एच.आई.वी जैसे अन्य रोगों के बारे में जानकारी दी और कहा कि इस समस्या से निपटने के लिए हमारी इस नई शुरूआत में आप हमारा साथ दीजिए और फेसबुक पर मेल कीजिए तभी हमारा भारत स्वस्थ भारत बनेगा।

उसके बाद बढ़ते कदम के सभी सदस्यों ने श्री टेरेंस लेविस के साथ फोटो खिचवाई और उन्हें अपने हाथों से बनी पेंटिंग भेंट की। सभी बाल साथी उनसे मिलकर बहुत खुश हुए।

-ज्योति (15 वर्ष)

बच्चों को फुटपाथ पर ही देखना चाहती है सरकार, तभी तो करती है रैन बसेरों का निर्माण

आप सभी जानते हैं कि इस बार दिल्ली की गर्मी ने लोगों का अपने घरों से बाहर निकलना दूभर कर दिया है। ऐसे में अगर घरों की बिजली चली जाए तो राहत मिलना और भी मुश्किल हो जाता है। लोग इस भयंकर गर्मी से बचने के लिए एसी, कूलर इत्यादि का इंतजाम करते हैं, ताकि इस गर्मी से उन्हें राहत मिल जाए। जब इस भरी गर्मी ने लोगों का घरों से बाहर निकलना दूभर कर रखा है तो यह सोचने वाली बात है कि जो बच्चे अपना जीवन रैन बसेरों और सड़कों पर रह कर गुजार रहे हैं, उनका क्या हाल हो रहा होगा और वह कैसे इन स्थानों पर रहते होंगे।

इस विषय पर बात करने के लिए जब बालकनामा के पत्रकार 16 वर्षीय सौरव रैन बसेरों में रहने वाले बच्चों से मिलने गए तो देखा कि रैन बसेरों के बाहर ही बच्चे रह रहे हैं। जब सौरव ने उनसे पूछा कि वह रैन बसेरों के बाहर क्यों है तो उन्होंने कहा कि रैन बसेरों में दोपहर का सूरज जब पड़ता है तो बहुत गर्मी हो जाती है। उन्होंने बताया कि जो रैन बसेरे हैं वह टीन की चादर से बने हैं और तेज धूप होने के कारण उसकी टीन की चादर इतनी तप जाती है कि रैन बसेरे के अंदर फूट फूट कर गर्मी बरसती है। ऐसे में बच्चे तो बच्चे उनके माता पिता भी रैन बसेरों के बाहर ही रहते हैं। सभी बच्चों का इस गर्मी में बुरा हाल हो रह रहा है। बच्चों ने कहा कि जब से दिल्ली में आप की सरकार बनी है उन्होंने हम बच्चों के रहने के लिए अभी तक कोई व्यवस्था नहीं की है, क्या हम बच्चे आम आदमी की लिस्ट में शामिल नहीं हैं।

बच्चों का कहना है कि हमारी सरकार ने रैन बसेरों का निर्माण शायद इसीलिए किया है, जिससे बाहर रहने वाले लोग और बच्चों को रहने का ठिकाना मिले और वह सड़कों से दूर हो जाएं। वह किसी भी पुल के नीचे या रेलवे स्टेशनों के आस पास ना रहें और उन सभी को वह इस ज़िन्दगी से दूर रख सकें। इसलिए सरकार ने हर एक जगह पर रैन बसेरों की सुविधाएं प्रदान की हैं।

लेकिन हम बच्चों का यह मानना है कि अगर सरकार ने हम बच्चों को सड़कों और फुटपाथों से हटाने के लिए यह सब किया होता तो वह हमें फुटापाथों व सड़कों के किनारे रैन बसेरे बनाकर न देती, बल्कि आम लोगों की तरह घरों की व्यवस्था करती। लेकिन ऐसा नहीं है सरकार तो चाहती ही नहीं कि हम बच्चे फुटपाथों से हटकर एक अच्छी ज़िंदगी जिएं जैसे आम लोग जीते हैं। कभी सराकर ने यह सोचा है कि लड़कियों को रैन बसेरे में क्या क्या परेशानी झेलनी पड़ती है।

यह रैन बसेरे ज़्यादतर फुटपाथ और सड़कों के किनारे पर बने होते हैं और इस वजह से हम बच्चों के साथ कई अलग अलग तरह की घटनाएं होती रहती हैं। कभी वह जगह हमारे लिए दुर्घटना स्थल बन जाती है तो कभी उस जगह पर लड़कियों लिए सुरक्षा का अभाव नज़र आता है। बच्चों का कहना है कि रैन बसेरों में सुविधाएं तो हैं नहीं, यदि होती तो लड़कियों के लिए कोई सुरक्षा का इंतजाम होता, जो उन्हें वहां सुरक्षित रख सकता।

यह सब देखकर और बच्चों की बातें सुनकर पत्रकार सौरव ने कहा कि अगर हमारी सरकार सचमुच हम बच्चों के लिए कुछ करना चाहती है तो हम बच्चों को रैन बसेरों की सुविधा नहीं, बल्कि आम लोगों की तरह घर वाली जिंदगी दे और हमें घर जैसी सभी सुविधाएं उपलब्ध कराए। तभी हम सभी बच्चे अपने माता पिता के साथ खुश और सुरक्षित रह सकेंगे।

-सौरव (16 वर्ष)

बढ़ते कदम के सदस्यों ने जुए के खिलाफ शुरू किया एक अभियान

नोएडा सेक्टर 66 कॉन्टेक्ट प्वांइट के आस पास बहुत से बच्चे ऐसे हैं, जो नशा करते हैं और जुआं भी खेलते हैं। इस वजह से वह बच्चे पढ़ने भी नहीं जाते, क्योंकि उन बच्चों को जुएं की लत लग चुकी है। यह बच्चे दिनभर बैठकर जुआं खेलते रहते हैं।

यहां के रहने वाले लोग तो जुआ खेलते ही हैं और इनके साथ बच्चे भी जुआं खेलते हैं। जुआं खेलने के कारण दूसरे बच्चों पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। यहां पर धड़ल्ले से चल रहे इस जुएं पर प्रतिबंध लगाने वाला भी कोई नहीं है।

कोई भी माता पिता अपने बच्चों को इस खेल से दूर रखने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। लेकिन बढ़ते कदम संगठन के बाल सदस्यों ने इस समस्या पर मिलकर एक मीटिंग का आयोजन किया, जिसमें उन बच्चों ने भाग लिया जो बच्चे नशा करते हैं और जुआं खेलते हैं।

इस मीटिंग में शामिल जिला सचिव सौरव ने भी भाग लिया और बच्चों से कहा कि आप सभी बाल साथी इस मीटिंग में किस मुद्दे पर चर्चा करने वाले हैं। 10 वर्षीय लोकेश ने कहा कि हम नशा और जुएं के मुद्दे पर अपनी बैठक कर रहे हैं, जिससे बच्चे इस चुंगल से आज़ाद हो सकें।

12 वर्षीय रोहन ने कहा कि हम बच्चे जुआं छोड़ना चाहते हैं। इसलिए हमने सोचा है कि जो बच्चे अपना जुआं छोड़ना चाहते हैं वो एक चेन बनाएंगे और उस चेन से वो बाल साथी जुड़ते रहेंगे जो अपना नशा और जुआं छोड़ देंगे।

इस तरह हम दूसरे बच्चों को भी अपनी इस चेन में शमिल कर सकेंगे। इस चेन की शुरूआत सबसे पहले 6 बच्चों द्वारा की गई, जो नशा करते थे और जिनके नाम हैं 10 वर्षीय लोकेश, 13 वर्षीय विकास, 12 वर्षीय रोहन, 12 वर्षीय करन, 13 वर्षीय आकाश, 12 वर्षीय अर्जुन। यह बाल साथी पहले जुआं खेलते थे पर अब इन बाल साथियों ने इस चेन की शुरूआत करते हुए यह आदत छोड़ दी है और अपने कदम बुराई की ओर बढ़ने से रोक लिए हैं।

अब यह सब बाल साथी दूसरे बच्चों को भी इस बारे में हिदायत दे रहे हैं, ताकि वह भी इनकी तरह सुधर जाएं और इस चेन से जुड़कर अच्छाई की ओर कदम बढ़ाएं। इस तरह चेन बनाने के बाद कुछ बच्चों ने बड़े लोगों को भी समझाया है कि वह बच्चों के साथ जुआं ना खेलें, बल्कि उन्हें जुआं खेलने से मना करें और वह खुद भी इस खेल को छोड़ दें।

इस दौरान बहुत से सदस्यों ने अपने पिता और भाईयों को जुआं खेलने से रोका है और इस प्रयास को करने के लिए बहुत से बाल साथी इस चेन से जुड़ने के लिए आगे आएं हैं।

-सौरव (16 वर्ष)

बाल मजदूरी से मुक्त बच्चा पहुंचा अपने घर

17 वर्षीय बबलू बिहार का रहने वाला है। वह दिल्ली आया और वहां एक ठेकेदार ने उसे अपने पास काम पर रख लिया। बबलू अपने ठेकेदार के पास जमीन के अंदर गड्ढे खोद कर बिजली के केबल डालने का काम करने लगा। इस काम को करने लिए उसके ठेकेदार ने उसे 350 रूपये दिहाड़ी पर रखा था और यह काम करते करते उसे पूरे तीन महीने हो गए थे। लेकिन उसके ठेकेदार ने उसे पिछले तीन महीनों के पूरे पैसे नहीं दिए थे, क्योंकि उसका ठेकेदार उसे अपने पास रखता था।

एक दिन बबलू के माता पिता का अचानक फोन आया और उसके माता पिता ने बताया कि बिहार में तेज़ भूकंप आने के कारण हमारा घर गिर गया है और इस आपदा के चलते उसकी माता की तबियत बहुत खराब हो गई है इसलिए पैसों की बहुत ज़रूरत है। यह सुनने के बाद बबलू एकदम टूट गया और अपने ठेकेदार के पास जाकर बोला कि उसे पैसों की सख्त ज़रूरत है, क्योंकि उसका घर भूकंप आने से गिर गया है और उसकी माता भी बहुत बीमार है। इसलिए मैं चाहता हूं कि आप मेरे तीन महीने के पैसे दे दें, जिससे मैं अपने घरवालों की सहायता कर सकूं।

लेकिन उसके ठेकेदार ने साफ मना कर दिया और बोला की मैं रूपये नहीं दूंगा। यह सुनने के बाद बबलू ने कहा कि वह रूपये क्यों नहीं देंगे?तो उसके ठेकेदार ने कहा कि जिसने तुम्हें काम पर लगवाया था मैं उसको पैसे दूंगा। फिर बबलू ने बताया कि वह तो यहां नहीं बिहार में हैं। फिर भी उसके ठेकेदार ने उसे पैसे देने से एकदम मना कर दिया। बबलू ने उसे अपनी परेशानी भी बताई। उसके बाद भी उसके ठेकेदार ने उसे वहां से भगा दिया और उसे पैसे नहीं दिए।

बबलू के पास इतने भी पैसे नहीं थे, जिससे वह अपना पेट भर सकें और कहीं जाकर रह सकें। क्योंकि दिल्ली में उसका कोई नहीं था। वह एकदम अकेला हो गया। फिर बबलू की मुलाकात बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव 16 वर्षीय चांदनी से हुई। बबलू ने चांदनी को अपने बारे में बताया और अपने ठेकेदार के बारे में भी बताया और कहा कि वह अपने घर बिहार जाना चाहता है। लेकिन मेरा ठेकेदार मेरे काम के पैसे नहीं दे रहा है तो चांदनी बबलू के साथ उसके ठेकेदार के घर गई। लेकिन उसका ठेकेदार घर पर नहीं मिला।

चांदनी ने उसके बेटे से बात की। उनसे कहा कि वह बबलू के पैसे दे दें। ठेकेदार के बेटे ने भी पैसे देने से मना कर दिया और बबलू को ज़ोर से डांटने लगा। उसके बाद चांदनी बबलू को पुलिस थाने लेकर गई और वहां जाकर पुलिस को जानकारी दी, तो उन्होंने कहा कि जब ठेकेदार आएगा तब आप हमें बुला लेना। फिर बबलू ने अपने ठेकेदार को फोन किया तो उसने फोन पर भी बबलू को पैसे देने से मना कर दिया और कहा कि जिसे बुलाना है बुला ले।

थोड़ी देर बाद ठेकेदार का फोन आया। वह बबलू से बोला मेरे पास आ जाओ मैं तुम्हें पैसे दूंगा लेकिन तुम अकेले आना। उसके बाद जिस जगह बबलू को उसके ठेकेदार ने बुलाया था, वह वहां पुलिस को अपने साथ लेकर गया। फिर पुलिस उसे गिरफ्तार कर थाने ले गई। वहां जाकर पुलिस से उसने ना जाने क्या बात की और उन्होंने उस केस को रफा दफा कर उसे छोड़ दिया।

पुलिस ने हम से कहा कि हम ऐसे केस नहीं देखते हैं आप कहीं और जाओ। फिर हमने चाइल्ड लाइन को फोन करके बुला लिया और चाइल्ड लाइन वाले बबलू को आकर अपने साथ ले गए, क्योंकि रात काफी हो चुकी थी। फिर अगली सुबह चाइल्ड लाइन वाले बबलू को थाने लेकर गए। वहां एफ. आई.आर. दर्ज करवाई और ठेकेदार को बुलवाया गया। बबलू को उसके काम के पैसे दिलवाने के लिए बोला तो उसके ठेकेदार ने उसे चौदाह हज़ार रूपये दिए। ठेकेदार को चाइल्ड लाइन के सदस्यों ने समझाया कि वह इस तरह से किसी भी बच्चे को काम पर ना रखे और उसे परेशान ना करें। इस तरह बबलू को उसके पैसे मिल गए और वह अपनी मेहनत के पैसे लेकर बहुत खुश हुआ। फिर उसे चाइल्ड लाइन ने उसके घर बिहार छुड़वा दिया।

-चांदनी (17 वर्ष)

छात्राओं के विरोध ने अध्यापिका को कराया उसकी गलती का एहसास

15 वर्षीय नीखत जो पहले एक सरकारी स्कूल में पढ़ाई करती थी। नीखत का स्कूल उसके घर से बहुत दूर था। इसके बवजूद वह रोज़ स्कूल पढ़ने जाती थी। लेकिन नीखत दोपहर का खाना खाने के लिए अपने घर वापस जाती थी और खाना खाकर आती थी। वह रोज़ ऐसा करती थी।

एक दिन नीखत की अध्यापिका ने उसे घर जाते हुए पकड़ लिया और कहने लगी कि तुम दोपहर में लंच के समय रोज़ रोज़ कहां जाती हो तो नीखत ने पूछने पर बताया कि मैं अपने घर खाना खाने के लिए चली जाती हूं। इतना सुनते ही उसकी अध्यापिका उस पर बरस पड़ी और कहने लगी कि तुम्हें यहां स्कूल में खाना नहीं मिलता, जो तुम स्कूल छोड़कर अपने घर जाकर खाना खाने जाती हो।

अपनी अध्यापिका से नीखत ने कहा कि मैम हमें यहां खाना तो मिलता है पर ऐसे खाने को कौन खाएगा जिस खाने में आए दिन कीड़े-मकोड़े निकलते हैं और इसी वजह से बच्चे यह खाना खाकर बीमार पड़ रहे हैं। जब नीखत ने अपनी अध्यापिका से यह कहा कि मैम आप तो यह सब बात पहले से ही जानते हो कि हम बच्चों के लिए जो खाना आता है उसमें आए दिन कीड़े मकोड़े निकलते रहते हैं तो इतना सुनते ही नीखत की अध्यापिका उस पर हावी हो गई और सभी बच्चों के सामने उसे डांटने और मारने लगी।

यह देखकर कक्षा के सभी बच्चे आ गए और नीखत के साथ हो गए। बच्चों ने कहा कि नीखत जो बोल रही है वो एकदम सही है। आज के बाद हम भी यह खाना नहीं खाएंगे। यह देखकर कक्षा की अध्यापिका भयभीत हो गई। फिर जाकर अध्यापिका ने नीखत को पीटना बंद किया और कहने लगी कि अब क्या किया जाए, आप सभी को दोपहर का लंच तो खाना ही पड़ेगा।

नीखत ने जवाब दिया कि अगर खाना हमारे स्कूल में ही बनेगा तो ही हम सब बच्चे खाना खाएंगे। स्कूल की अध्यापिका ने नीखत से कहा कि तुम बहुत बोल रही हो। यहां खाना बनाने के लिए कोई नहीं आएगा तो क्या तुम सारे बच्चों का खाना पकाओगी। नीखत ने कहा कि हम खुद खाना पकाने वाले को लेकर आएंगे। हम बच्चे उन्हें खुद समझा देंगे और उनकी मदद भी कर देंगे।

उसके बाद अध्यापिका ने कहा कि मुझे कल तक खाना पकाने वाला चाहिए, जो बच्चों के लिए स्कूल में खाना पकाकर दे। उस दिन ही नीखत ने सर्वे कर दो महिलाओं को खोज लिया, जो स्कूल में ही खाना पकाकर बच्चों को देती। यह देखकर सभी बच्चे बहुत खुश हुए अब उन्हें अच्छा, साफ सुथरा और बहुत स्वादिष्ट खाना खाने को मिल रहा है। अब कोई भी अपने स्कूल से वापस अपने घर खाना खाने के लिए नहीं जाता और सभी बच्चे पेट भर खाना खाते हैं।

चांदनी (17 वर्ष)

22 सड़क व कामकाजी बच्चे पहुंचे सरकारी स्कूल

नोएडा के सेक्टर 50 और सेक्टर 66 में रहने वाले सड़क व कामाकजी बच्चे कबाड़ा बीनते हैं और मेहनत करके अपना गुजारा करते हैं। यहां रहने वाले किसी भी बच्चे ने ना तो स्कूल में कदम रखा था और न ही कभी कोई उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करता था। चेतना संस्था के कार्यकर्ता और बढ़ते कदम संगठन को जब इस बात का पता चला तो वह इस जगह गए और वहां के रहने वाले निवासियों से बात की। इसके बाद उन सभी की आपसी सहमति से संस्था द्वारा सेक्टर 50 और सेक्टर 66 में कॉन्टेक्ट प्वांइन्ट चलाया जाने लगा।

संगठन वहां रहने वाले बाल साथियों को कॉन्टेक्ट प्वांइन्ट पर पढ़ने के लिए प्रेरित करने लगा। संगठन के सदस्यों ने बाल साथियों और वहां के निवासियों को बढ़ते कदम संगठन और उसके कार्यो के बारे में जानकारी दी। उन्होंने लोगों को बताया कि सरकार ने हम बच्चों को भी चार अधिकार दिए हैं, जिनमें से एक अधिकार हमें शिक्षा पाने का भी है। उनकी बातों से प्रभावित होकर बाल साथी कॉन्टेक्ट प्वांइन्ट पर पढ़ने के लिए आने लगे।

चेतना संस्था के कार्यकर्ता भी वहां के निवासियों को अभिभावक मीटिंग और स्टेकहोल्डर मीटिंग के माध्यम से शिक्षा के महत्व के बारे में जानकारी देते और उन्हें जागरूक करते। इसी का परिणाम है कि आज सेक्टर 50 और सेक्टर 66 के बाल साथियों का स्कूल में दाखिला भी हो गया है और वह बच्चे रोज़ स्कूल जाने लगे हैं।

इस कार्य को देखकर वहां के निवासियों ने कार्यकर्ता से अनुरोध किया कि वे उनके बच्चों का भी दाखिला स्कूलों में करवा दें। इसके बाद कार्यकर्ताओं ने उनके बच्चों का दाखिला वहां के स्थानीय स्कूल में करवा दिया। इस तरह अब तक चेतना संस्था व बढ़ते कदम संगठन के प्रयास से 22 सड़क और कामकाजी बच्चों को स्कूल में अपनी शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिला, जो बाल साथी कॉन्टेक्ट प्वांइन्ट पर पढ़ने आते थे वह अब स्कूल जाते हैं।

वह संगठन द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों में भी भाग लेते हैं। अब बच्चे अपने अभिभावकों के अंदर आए इस बदलाव को देखकर बहुत खुश हैं। श्री राम जी कहते हैं कि जब मेरा बेटा स्कूल की ड्रेस पहनेगा तो मुझे बहुत खुशी महसूस होगी। मैं चाहता हूं कि वह खूब पढ़े और पढ़ लिखकर एक अच्छा इंसान बनें।

दुलारी कहती है कि मेरी मां मेरे स्कूल जाने से बहुत खुश है। वह कहती है कि मेरी तरह अब मेरे बच्चे तो अनपढ़ नहीं कहलाएंगे।

-सौरव (16 वर्ष)

एस.एच.ओ. से मिलकर खुश हुए बच्चे

मथुरा जंक्शन रेलवे स्टेशन के एस.एच.ओ. श्री पंकज लवानिया जब हार्म रिडक्शन सेंटर के बच्चों से मिलने पहुंचे तो सभी बच्चे उनसे मिलकर बहुत खुश हुए। एस.एच.ओ. श्री पंकज जी के साथ जीआरपी के अन्य कर्मचारी तथा प्रेस रिपोर्टर भी सेंटर आए हुए थे। अपनी विजिट के दौरान एस.एच.ओ. जी ने सभी बच्चों से बात की और उनकी समस्याओं के बारे में पूछा। बातचीत के दौरान उन्होंने बच्चों से पूछा कि तुम लोगा कहां के रहने वाले हो और ऐसा क्या कारण था, जिसकी वजह से तुम्हें अपना घर छोड़कर स्टेशन पर रहना पड़ रहा है और यहां पर रहकर तुम लोग क्या काम करते हो?

बच्चों ने बताया कि घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण और माता पिता से सहयोग न मिल पाने के कारण उन्हें स्टेशन पर आकर रहना पड़ा। यहां रहकर वह पानी की बोतले बेचनें, गुटखा, सिगरेट, पान मसाला बेचने, कबाड़ा बीनने, ट्रेनों में झाड़ू लगाने, भीख मांगने इत्यादि काम करते हैं। बच्चों की बात सुनकर एस.एच.ओ. श्री पंकज जी ने उनसे कहा कि यह सब अपराध है, इसलिए तुम लोग यह काम करना बंद कर दो। उन्होंने कहा कि जो बच्चे घर जाना चाहते हैं उनको घर भेजा जाएगा और इस काम में हम उनकी पूरी मदद करेंगे। जो बच्चे घर नहीं जाना चाहते उनको होम में रखा जाएगा या उनके लिए शेल्टर होम खोला जाएगा, जहां बच्चे रात को रह सकें और स्टेशन की जिंदगी से दूर हो सकें।

इसके बाद उन्होंने बच्चों से पूछा कि आप सभी इस सेंटर में आकर क्या करते हो। बच्चों ने बताया कि वो सुबह सेंटर आकर हाथ पैर धोते हैं और प्रार्थना व योगा करते हैं। इसके बाद पढ़ाई करते हैं, आर्ट एंड क्राफ्ट की वस्तुएं बनाते हैं। इसके बाद हमें यहां पर भोजन दिया जाता है। हम यहां पर गेम खेलते हैं। हम डांस करते हैं और अलग अलग गतिविधियों में भाग लेते हैं। इस सेंटर में हम बच्चों की काउंसलिंग भी की जाती है। शाम को हम बच्चे यहां से चले जाते हैं।

बच्चों के बारे में और उनसे मिलकर एस.एच.ओ. श्री पंकज जी बहुत खुश हुए और कहा कि मैं अपने स्तर से बच्चों के लिए हरसंभव मदद करूंगा और बच्चों को भी इस काम में हमारी मदद करनी होगी।

बच्चों ने बताया कि उन्हें भी एस.एच.ओ. जी से मिलकर और बात करके बहुत अच्छा लगा। गोलू ने बताया कि उनके साथ जो मीडिया के भैया आए थे, हमें उनसे बात करके और उनको अपनी समस्याओं के बारे में बताकर बहुत अच्छा लगा।

-पूजा (16 वर्ष)

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने खुलवाया बैंक में खाता

भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही जन धन योजना के तहत मथुरा स्टेशन पर रहने वाले चार बच्चों का भारतीय स्टेट बैंक, मथुरा में जीरो बैलेंस पर खाता खुल गया। ये बच्चे बहुत दिनों से बैंक में अपना खाता खुलवाना चाहते थे, लेकिन बच्चों के पास कोई पहचान पत्र न होने के कारण ये अपना खाता नहीं खुलवा पा रहे थे। ये बहुत बार बैंकों के चक्कर लगा चुके थे और वहां के मैनेजर से बात कर चुके थे कि हमारा भी खाता अपनी बैंक में खोल दीजिए, लेकिन हर बार उन्हें निराश होकर लौटना पड़ रहा था।

परंतु भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना के तहत लगाए गए आधार कार्ड के कैंपों के तहत चेतना संस्था की मदद से इन बच्चों ने पहले अपना आधार कार्ड बनवाया। इस प्रकार इन बच्चों को उनकी पहचान का अधिकार मिला और साथ में उनका बैंक में खाता भी खुल गया। जिन बच्चों का बैंक में खाता खुला है उनका कहना है कि वे रोज 200 से 300 रूपए कमा लेते हैं। लेकिन पैसा रखने की कोई जगह न होने के कारण अपने पैसों को खर्च कर देते थे या फिर उनके पैसे चोरी हो जाते थे।

बच्चे बैंक में अपना खाता खुलवाकर बहुत खुश हैं और कहते हैं कि अब हम अपने पैसों की बचत करेंगे और अपने खाते में ये पैसे जमा करेंगे। मुकेश और गोपाल का कहना है कि यदि हमारा खाता और पहले खुल जाता तो हम अब तक बहुत पैसे इकट्ठा कर लेते। क्योंकि अब हमने नशा करना छोड़ दिया है और अब हम पैसे भी अनावश्यक कम खर्च करते हैं।

जब मुकेश, गोपाल, रिंकू और वकील के बारे में बच्चों ने सुना कि इनका बैंक में खाता खुल गया है तो सभी बच्चे अपना खाता बैंक में खुलवाने की मांग करने लगे। तब चेतना संस्था के कार्यकर्ता ने बैंक प्रबंधक से बात की तो उन्होंने कहा कि हम आपके सेंटर में कैंप लगवा देंगे और आप अपने सभी बच्चों का खाता खुलवा देना।

-पूजा (16 वर्ष)

दीपक की जिंदगी को मिला सहारा

आप सभी जानते हैं कि रेलवे स्टेशन पर रहने वाले बच्चों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। बच्चे स्टेशनों को जैसे अपना घर समझने लगे हैं। इन बच्चों को रेलवे स्टेशन की ज़िन्दगी इतनी अच्छी लगने लगी है कि वे यहां से जाना ही नहीं चाहते। यह सभी बच्चे यहीं पर रह कर काम करने लग जाते हैं।

आश्चर्य की बात यह है कि यह सभी बच्चे किसी ना किसी कारण यहां आकर रहते हैं, काम करते हैं या तो उन्हें उनकी मजबूरी स्टेशन तक खींच लाती है या फिर बहुत से बच्चे ऐसे हैं जो अपने माता पिता की लापरवाही की वजह से रेलवे स्टेशनों पर आ जाते हैं। ज़्यादातर बच्चे स्टेशनों पर इसलिए आते हैं क्योंकि वहां आसानी से रहने का ठिकाना मिल जाता है और खाने को कुछ भोजन भी मिल जाता है। इस तरह वह अपनी ज़िन्दगी रेलवे स्टेशनों पर ही बसर करते हैं।

इसी तरह की समस्या से परेशान होकर 15 वर्षीय दीपक भी मथुरा स्टेशन पर आ गया और काम करने लगा। वहां आकर दीपक नशा भी करने लगा। जब बढ़ते कदम के सदस्य 14 वर्षीय शबाना और 15 वर्षीय रज़िया दीपक से मिलीं तो उसके बारे में जाना और पूछा कि वह स्टेशन पर कैसे आया। तो दीपक ने बताया कि उसकी माता का नाम शांति है और उसके पिता का नाम भवानी है। वह झांसी के रहने वाले हैं और दीपक पहले अपने माता पिता के साथ झांसी में ही रहता था। लेकिन कुछ समय पहले दीपक के पिता जी उसकी माता को छोड़कर चले गए। फिर दीपक अपनी माता को लेकर मथुरा स्टेशन आ गया। वहां आकर उसकी माता की तबियत खराब हो गई तो उसने अपनी माता की दवा दारू के लिए स्टेशन पर काम करना शुरू कर दिया। लेकिन बड़ी दुख की बात है कि उसकी माता की ज़्यादा तबियत खराब होने के कारण उसकी मृत्यु हो गई। इस तरह दीपक अकेला हो गया वह स्टेशन पर रहकर कबाड़ा बीनने का काम करने लगा, जिससे वह अपनी गुजर बसर करता है। यह सब जानने के बाद शबाना और रज़िया दीपक को चेतना द्वारा चलाए जा रहे हार्म रिडक्शन सेन्टर लेकर गई और वहां पर पढ़ने वाले सभी बच्चों से उसकी मुलाकात करवाई, जिससे वह अपने आप को अकेला ना समझे व बच्चों के साथ घुल मिल जाए और पढ़ाई करने लगे।

दीपक का कहना है कि वह पहले नशा करता था तथा अपने आप को बहुत अकेला समझता था। लेकिन जब से वह बढ़ते कदम से जुड़ा है उसने नशा करना कम कर दिया है। अब वह सेन्टर में रोज़ पढ़ने जाता है और साथ ही उसका आधार कार्ड भी बन गया, जिससे उसने अपना बैंक में खाता भी खुलवा लिया है। अब दीपक के बहुत से दोस्त भी बन गए हैं, जिनके साथ वह उठता बैठता है और अपने दोस्तों के साथ समय बिताता है। अब दीपक अपने आप को अकेला नहीं समझता और दीपक पहले से बहुत खुश हैं।

-पूजा (16 वर्ष)

जिला अध्यक्ष ने बाल साथियों को दी महत्वपूर्ण जानकारियां

बढ़ते कदम के मथुरा स्टेशन के हार्म रिडक्शन सेंटर में आयोजित कोर कमेटी मीटिंग में बच्चों की समस्याओं पर चर्चा की गई। मीटिंग का संचालन बढ़ते कदम की जिला अध्यक्ष पूजा द्वारा किया गया। इस मीटिंग में सभी बाल साथियों ने भाग लिया, जिसमें लड़के और लड़कियां दोनों शमिल हुए। यह बच्चे मथुरा रेलवे स्टेशनों पर अलग अलग प्रकार का नशा करते हैं और काम भी करते हैं।

पूजा ने सभी बाल साथियों का स्वागत किया और उपस्थित सभी बाल साथियों को बताया कि हम इस मीटिंग का आयोजन इसलिए करते हैं ताकि हमें आप लोगों की परेशानियों के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके और हम जल्द से जल्द उसे दूर कर सकें।

पूजा ने बच्चों से कहा कि यदि आपको अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर खेलने का सामान नहीं है, फर्स्ट एड बॉक्स की सुविधा नहीं है, आप लोग आपस में झगड़ा करते हैं और अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट के भैया दीदी की बात नहीं मानते हैं तो आप अपनी इन बातों को इस मीटिंग में रख सकते हैं।

मीटिंग के दौरान पूजा ने बाल साथियों को बढ़ते कदम के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हमारा संगठन सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए काम कर रहा है और वह सड़क व कामकाजी बच्चों की उनकी पहचान दिलाने, उन्हें इज्जतदार जिन्दगी दिलाने और गैर सरकारी सभाओं में सीधी भागीदारी के उद्दे यों को आगे बढ़ा रहा है। उसने कहा कि हर बच्चे को जब भी समय मिले अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर रोज़ आना चाहिए और आकर पढ़ाई करनी चाहिए।

सभी बाल सदस्यों को हार्म रिडक्शन सेंटर में आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों में भी भाग लेना चाहिए, जिससे पढ़ाई के साथ साथ उन्हें और भी जानकारियां प्राप्त हो सकें।

इस मीटिंग के दौरान किशन ने कहा कि जो लोग बच्चों से भीख मंगवाते हैं, वह उन बच्चों को बुरी तरह से मारते पीटते हैं और उनके पैसे भी छीन लेते हैं। एक बाल साथी ने कहा कि बहुत बार जब मैं भी कबाड़ा बीनकर वापस आ रही होती हूं तो कुछ बड़े लड़के बेवजह मुझे परेशान करते हैं और मेरा सामान छीन लेते हैं। सभी बातों को सुनने के बाद पूजा ने कहा कि यदि कोई आपके साथ जबरदस्ती करे तो आप अपने संगठन के लीडर या भैया दीदी को बताएं। इसकी जानकारी दें वो आपकी मदद जरूर करेंगे या फिर 1098 चाइल्ड हेल्प लाइन को फोन करके उनकी मदद लें, जो सिर्फ बच्चों के लिए ही कार्य करती है वह बच्चों के लिए 24 घंटे कार्य करती है चाहे दिन हो या रात किसी भी समय सूचना मिलने पर वह बच्चों के पास पहुंच कर उनकी मदद करती है।

-पूजा (16 वर्ष)

सरकारी स्कूलों में 219 बच्चों का हुआ दाखिला

बढ़ते कदम जो कि सड़क व कामकाजी बच्चों का संगठन है। यह संगठन विगत कई वर्षों से चेतना संस्था के सहयोग से अलग अलग स्थानों पर सड़क व कामकाजी बच्चों के लिए कार्य कर रहा है और इस संगठन द्वारा बहुत से बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया जा रहा है। इस प्रयास के चलते संगठन से जुड़े बहुत से सदस्य अपने अपने क्षेत्रों के बच्चों व उनके परिजनों को शिक्षा की महत्ता के बारे में जानकारी दे रहे हैं और उन्हें स्कूल जाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

संगठन की इस पहल से बहुत से बच्चों ने शिक्षा के प्रति अपना मन भी बनाया है। इन बच्चों ने पढ़ाई लिखाई के महत्व के बारे में जागरूक होकर अपने माता पिता को भी समझाया है कि वह अपने बच्चों को स्कूल भेजें और उन्हें शिक्षित करें।

आगरा शहर की कई मलिन बस्तियों में रहने वाले सड़क व कामकाजी बच्चे जो अलग अलग प्रकार का जैसे जूते बनाना, ब्रश बनाना, झाड़ू बनाना व कतरन छांटना इत्यादि कार्य कर रहे हैं। इस काम में लड़के व लडकियों की बराबर की भागीदारी है।

ये बच्चे अपनी शिक्षा से परे हटकर पूरे दिन काम करते हैं और अपने घरों का खर्च चलाते हैं। इस रोजमर्रा की जिन्दगी में इन बच्चों के माता पिता इनसे बात नहीं करते कि ये बच्चे इस जिन्दगी को छोड़कर कैसे आगे बढें

और कैसे ये शिक्षा से जुड़ सकें।

शिक्षा के प्रति इस उदासीनता को देखते हुए बढ़ते कदम संगठन द्वारा बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के संबंध में कई प्रकार की गतिविधियां आयोजित की जाती हैं, जिससे काम कर रहे बच्चों को शिक्षा के महत्व के बारे में पता चले। इस प्रकार जो बच्चे कभी स्कूल में प्रवेश नहीं लेना चाहते थे, उन बच्चों ने आज अपनी शिक्षा के प्रति उत्सुकता दिखाई है और वह बच्चे स्कूल में दाखिला लेने के लिए राजी हुए हैं।

इस प्रकार बढ़ते कदम और चेतना संस्था के सहयोग से आगरा की लगभग बारह बस्तियों जिसमें राजनगर, जगदीश पुरा, पृथ्वी नाथ, आजम पाड़ा, लाल डिग्गी, गौतम नगर, मारवाड़ी, इन्द्रा नगर, अब्बास नगर, झाड़ू वाली बस्ती, नया घेर, छिद्दा नगला, आदि मलिन बस्तियों से तीन सौ सड़क एवं कामाकजी बच्चों का सरकारी स्कूलों में दाखिला करवाया गया है।

विद्यालयों में प्रवेश पाकर बच्चे बहुत खुश हैं। जगदीश पुरा में रहने वाले बाल साथी दिनेश ने बताया कि मैंने पहले कभी अन्दर से विद्यालय नहीं देखा था, मगर बढ़ते कदम की जिला अध्यक्ष पूनम दीदी ने और चेतना के भैया दीदी ने हमारे माता पिता को शिक्षा के महत्व के बारे में बताया। आज उनके प्रयासों द्वारा ही हमें विद्यालय में प्रवेश मिला है। अब मैं प्रतिदिन विद्यालय जाता हूं। अब मैं विद्यालय में प्रवेश पाकर बहुत खुश हूं।

नया घेर से गुड़िया नामक बालिका ने बताया कि वह पहले इधर उधर घूमकर अपना समय नष्ट किया करती थी। मगर एक दिन मेरे पास पूनम दीदी आई और उहोंने मुझे बढ़ते कदम के बारे में बताया उसके बाद मैं इस संगठन की सदस्य बन गई। फिर मुझे व मेरे माता पिता को धीरे धीरे शिक्षा के बारे में पता चला, तब जाकर मेरे माता पिता को शिक्षा का महत्व समझ आया और पूनम दीदी के काफी प्रयास करने के बाद मैंने अपने अधिकारों के बारे में जाना और अपना दाखिला स्कूल में करवाया। अब मैं बहुत खुश हूं।

-पूनम (16 वर्ष)

अध्यापिका के अत्याचारों का शिकार होते बच्चे

मेरा नाम विमल (परिवर्तित नाम) है। मेरी उम्र 14 वर्ष है। मैं अगरा में अपने माता पिता के साथ रहता हूं। मैं कक्षा आठ में पढ़ता हूं। मेरे स्कूल का नाम प्राथमिक कन्या विद्यालय है। इस स्कूल में हम बच्चों को ठीक से पढ़ाया नहीं जाता है और जो सरकार की तरफ से हम बच्चों को मिड डे मील मिलता है वो भी समय से नहीं बन पाता है।

इस स्कूल के जो अध्यापक हैं वह हम बच्चों को गन्दी गन्दी गालियां देते हैं। साथ में हमारे माता पिता से भी दुर्व्यवहार करते हैं और जब हम अपनी किताब अध्यापिका के पास लेकर जाते हैं तो वह कुछ गलती हो जाने पर हमारी किताब गुस्से से फेंक देती हैं।

एक दिन हम बच्चे बी.एस.ए. ऑफिस में अध्यापिका श्रीमती मुन्नी देवी की शिकायत करने गए तो मैडम ने हमें बी.एस.ए. सर से बात नहीं करने दी और हम बच्चों के पीछे मारने के लिए एक आदमी को भेजा। हम बच्चे डर के मारे वापस अपने स्कूल में चले गए।

उसके बाद अध्यापिका को पता चल गया कि हम उनकी शिकायत बी.एस.ए. ऑफिस में करने जाने की कोशिश कर रहे हैं तो उन्होंने हम बच्चों की बहुत पिटाई लगाई, लेकिन हम बच्चे फिर दूसरे दिन बी.एस.ए. ऑफिस गए जहां जाकर हमने अपने स्कूल की समस्या के बारे में बताया।

बी.एस.ए. सर ने कहा कि हम 2 बजे तक किसी को भेज देंगे, जो आप सभी बच्चों की समस्या को देखेगा और उसका हल निकालेगा तथा उस समस्या पर बातचीत करेगा। उस दिन हम बच्चों ने 2 बजे तक उनका इंतजार किया, लेकिन बी.एस.ए. ऑफिस से कोई भी नहीं आया जो हम बच्चों की परेशानी को हल कर सके। इस तरह राह देखते देखते पूरा एक सप्ताह गुजर गया।

एक सप्ताह बाद हम बच्चे अपने स्कूल में पहुंचे तो हमने अध्यापिका से पूछा कि आज खाने में क्या पकाया है तो मैम ने हमें गाली देकर कहा कि आप सभी बच्चे तो हराम का खाना खाते हो। उस अध्यापिका का व्यवहार बच्चों के प्रति बिल्कुल भी ठीक नहीं है।

वह आए दिन हम बच्चों को किसी ना किसी बहाने से मारती रहती है और गाली देती रहती है। कई बार तो हम बच्चों पर चोरी का इल्जाम भी लगाया है। एक दिन हम बच्चे दोपहर का खाना खाकर खेल रहे थे तो राहुल (परिवर्तित नाम) को अध्यापिका ने अन्दर बुलाया और बिना किसी बात पर उन्होंने राहुल की पिटाई लगाई।

राहुल का एक पैर खराब है लेकिन उस अध्यापिका ने बिल्कुल भी राहुल पर तरस नहीं खाया और उसी पैर में राहुल के जोर से डंडा मार दिया जैसे ही राहुल खुद को बचाने के लिए पीछे हटा तो उसके सिर में बहुत तेज अलमारी लग गई, लेकिन फिर भी राहुल ने अपनी अध्यापिका से कुछ नहीं कहा।

राहुल ने बढ़ते कदम की जिला अध्यक्ष पूनम को फोन कर दिया और स्कूल की इस पूरी समस्या के बारे में बताया। पूनम के साथ मिलकर हमने चाइल्ड लाइन को फोन किया और उन्हें स्कूल की समस्या बताई। समस्या को सुनने के बाद चाइल्ड लाइन की सदस्य रीतू दीदी हमारे स्कूल में आई। हम बच्चों ने अपनी बातों को उनसे बताते हुए कहा कि हमें जूनियर कक्षा में दो साल हो गए हैं और दो सालों से ही हम इस अध्यापिका को झेल रहे हैं पर अब नहीं झेल सकते क्योंकि इनका अत्याचार बढ़ता ही जा रहा है। वह हर रोज हम बच्चों को मारती है।

कुछ बच्चे इस जूनियर कक्षा में नए आए हैं और यह सब हम बच्चों के साथ अब दुर्व्यवहार नहीं होने देंगे। यह अध्यापिका गन्दे शब्दों से बच्चों को डांटती है। हम यह नहीं सुन सकते। बच्चों ने कहा कि हम बच्चे इतनी दूर दूर से पढ़ने के लिए आते हैं, अगर हमें कुछ हो गया तो इसका जिम्मेदार कौन होगा। यह सब सुनने के बाद चाइल्ड लाइन की रीतू जी ने बी.एस.ए. सर के पास लेटर भेजा कि वह इस समस्या का कोई जल्दी समाधान निकालें तथा इस समस्या को हल करें। लेकिन अब तक इस मामले में किसी भी तरह से कोई भी सुनवाई नहीं की गई है।

-पूनम (16 वर्ष)

कैसे कराऊं इलाज अपनी बढ़ती बीमारी का?

मेरा नाम भावना है। मेरी उम्र 15 साल है। मैं जगदीश पुरा में रहती हूं। मैं जूते में चेन लगाने का काम करती हूं। मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। इसी कारण मैं स्कूल ना जा सकी। मेरे घर में 5 भाई बहन हैं और मेरे पिता जी की मृत्यु हो चुकी है।

मैं बढ़ते कदम संगठन की सदस्य भी हूं और चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे कॉन्टेक्ट प्वाइन्ट पर पढ़ने जाती हूं। साथ ही मैं बढ़ते कदम द्वारा आयोजित सभी गतिविधियों में भाग लेती हूं और तीन बार मैं कोर कमेटी मीटिंग में भाग ले चुकी हूं ।

मैं अपने भाई बहनों के लिए बहुत मेहनत करती हूं। मेरे घर की हालत इतनी खराब है कि मेरे साथ साथ मेरी माता भी काम करती है। एक दिन मैं अपने कॉन्टेक्ट प्वाइन्ट पर पढ़ने के लिए गई और अचानक मेरे पेट में दर्द हुआ तो मुझे बढ़ते कदम की दीदी ने दो रूपये की एक गोली लाकर दी और उस गोली को खाकर मुझे थोड़ी देर बाद पेट दर्द में आराम मिल गया।

इसी बीच हम जूतों में चेन लगाने का जो काम किया करते थे, वह भी दो तीन महीनों से बंद हो गया है। हमारा जूते का काम भी नहीं चल रहा है। इस वजह से हमने दूसरा काम ढूंढना शुरू किया। लेकिन हमें कोई भी काम करने के लिए नहीं मिला।

मैं इसी सोच फिकर में रहती कि अगर हमें इस तरह कहीं काम करने के लिए नहीं मिला तो हम काम नहीं कर पाएंगे और पैसे नहीं कमा पाएंगे तो खाएंगे क्या?हमारे घर की स्थिति इतनी खराब होती जा रही थी कि शायद काम ना मिलता तो ना जाने क्या होता?यह हालत देखकर एक आंटी जी ने हमें चूरन की पुड़िया बनाने का काम दिया, जिसमें हमें 5 किलो चूरन की पुड़िया बनाने पर 50 रूपये मिलते हैं। फिर उसी पैसों से हम अपने घर की गुजर बसर करते हैं और अपना खर्चा चलाते हैं।

लेकिन एक दिन जब मैं अपनी माता के साथ काम कर रही थी तो मेरे पेट में फिर वही दर्द बहुत जोर से हुआ तो मेरी माता घबरा गई और तुरंत उन्होंने पड़ोसियों से कुछ पैसे उधार लिए और मुझे डॉक्टर के पास लेकर गई तो डॉक्टर साहब ने बताया कि मेरे कमर की साइड पर गांठ है। डॉक्टर साहब ने मुझे कुछ इंजेक्शन लगाएं और कुछ दवाईयां दी।

जब से मुझे यह बीमारी हुई है मेरी कमर में हमेशा दर्द रहता है। जिससे मुझे बहुत तकलीफ होती है। अब तो मैं बस यही सोचती रहती हूं कि 50 रूपये से घर का खर्चा चलाएंगे या फिर अपनी दवा दारू कराएंगे। अब तो हमें कोई उधार भी नहीं देगा और अगर चूरन के पैसों से मेरी दवा दारू करेंगे तो मेरे भाई बहन को खाना भी नहीं मिलेगा। मेरी माता कैसे इतने कम पैसों में मेरा इलाज करा सकेगी और घर का खर्चा चला सकेगी।

-पूनम (16 वर्ष)

बढ़ते कदम की सदस्य ने कराया स्कूल में दूसरे बाल साथियों का दाखिला

13 वर्षीय गुड्डी, जो आगरा में बसी मारवाड़ी बस्ती में रहती है और वह हंटर का काम करती है। उसके घर की स्थिती ठीक ना होने के कारण वह स्कूल ना जा सकी। लेकिन एक दिन उसकी बढ़ते कदम की सदस्य से मुलाकात हुई। बढ़ते कदम की सदस्य पूनम ने उसे बताया कि वह चेतना संस्था द्वारा चालाए जा रहे कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढ़ने के लिए जा सकती है। जहां सड़क एवं कामकाजी बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाती है और उन्हें आगे बढ़ने का मौका दिया जाता है। साथ ही उन सभी बच्चों की मदद भी की जाती है और उन्हें अपनी समस्याओं को रखने का अवसर भी मिलता है, जिससे बच्चे को किसी भी तरह की समस्या होने पर उनकी मदद की जा सके।

यह सुनने के बाद गुड्डी रोज़ अपने हंटर का काम करने के बाद कॉन्टेक्ट प्वाइंट पढ़ने के लिए जाने लगी और वह उस कॉन्टेक्ट प्वाइंट की लीडर बन गई और हर एक मीटिंग में भाग लेने लगी व बच्चों की समस्याओं को हल करने लगी। एक साल बाद गुड्डी का दाखिला सरकारी स्कूल में करवा दिया गया।

वह रोज स्कूल जाने लगी। गुड्डी को स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है और वह चाहती है कि उसकी बस्ती के सभी बच्चे अपना दाखिला स्कूल में करवाकर स्कूल जाएं। इसलिए वह सभी बच्चों को पढ़ाई करने के लिए प्रेरित करती है और उनके माता पिता को समझाती है, जिससे वह अपने बच्चों का दाखिला स्कूल में करवा दें।

जो माता पिता अपने बच्चों को स्कूल जाने से रोकते हैं और कहते हैं कि उनके बच्चे स्कूल जाकर क्या करेंगे। गुड्डी उनके माता पिता के पास जाकर उन्हें समझाती है कि स्कूल में आपके बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलेगी, वह पढ़ लिखकर आगे बढ़ेंगे।

स्कूल जाने से बहुत फायदा पहुंचता है। पहनने के लिए ड्रेस मिलती है और एक वक्त का खाना भी मिलता है। साथ ही आपके बच्चों को ढेर सारा ज्ञान मिलेगा। इस तरह से गुड्डी ने उनके माता पिता को समझाया, जो अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते थे। गुड्डी की मेहनत रंग लाई और अब वह अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए तैयार हो गए हैं।

गुड्डी के इस प्रयास से उसने अब तक पांच बच्चों के माता पिता को समझाकर उनके बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तैयार भी कर लिया है और उन पांचों बच्चों का प्राथमिक विद्यालय, महल यमुना पार स्कूल में दाखिला भी करवा दिया गया है।

गुड्डी कहती है कि मैंने जिन पांच बच्चों दीपाली, लकी, सुमन, डोली, रेखा का स्कूल में दाखिला करवाया है, ये बच्चे रोज समय से स्कूल जाते हैं। मैं उन बच्चों को स्कूल जाते देखती हूं तो मुझे बड़ी खुशी महसूस होती है। अब हम सब बच्चे साथ मिलकर स्कूल जाते हैं। दीपाली का कहना है कि वह स्कूल में प्रवेश लेकर बहुत खुश है और उसने कहा कि हमारे माता पिता पहले हमें बिल्कुल भी स्कूल जाने के लिए नहीं कहते थे, लेकिन बढ़ते कदम की लीडर गुड्डी ने हमारे माता पिता को समझाया और उन्हें अपने प्राथमिक विद्यालय, महल यमुना पार स्कूल लेकर गई और हमारा उसी स्कूल में दाखिला करवा दिया।

-पूनम (16 वर्ष)

नगर निगम से कोई सहायता न मिलने पर बाल साथियों ने स्वयं उठाई साफ सफाई की जिम्मेदारी

झांसी के गोविन्द चौराहे की जिस बस्ती में चेतना संस्था कॉन्टेक्ट प्वाइंट चलाती है, उसके आस पास बहुत गंदगी है। इस स्थान पर इतनी सड़न और बदबू भरी रहती है कि बाल साथियों का वहां पर बैठकर पढ़ना मुश्किल होता है। दिन रात मक्खी और मच्छरों ने यहां के लोगों का जीना दूभर कर रखा है।

इस स्थान पर इतनी गंदगी होने के बाद भी वहां के रहने वाले लोग इधर उधर कूड़ा कचरा फेंकते रहते हैं। जब बच्चों की पढ़ाई करने का समय होता है तो पहले वे वहां की साफ सफाई करते हैं, तब पढ़ने बैठते हैं। रोज की इस दिनचर्या से परेशान होकर बाल साथियों ने आस पास के लोगों से अपील भी की, कि वे इस स्थान पर कूड़ा ना डालें बल्कि यहां की साफ सफाई के बारे में कुछ करने की सोचें। वे लोग इस स्थान को साफ रखें, जिससे बाल साथियों की पढ़ाई में किसी भी तरह की रूकावट पैदा ना हो। बाल साथियों ने वहां के लोगों से अपील की, कि वे सब लोग मिलकर इस गंदगी को वहां के एम.सी.डी. द्वारा साफ करवाएं।

जब हमारे बालकनामा के रिपोर्टर ने इस विषय पर 14 वर्षीय दिनेश से बात की तो उसने बताया कि हम बच्चों को इस कचरे के ढेर से बहुत परेशानी होती है और इस परेशानी की वजह से हम बच्चे यहां खेल भी नहीं पाते और जब तेज़ हवा चलती है तो यहां पर पड़ी कचरे की बदबूदार थैलियां हमारे घरों के अंदर उड़कर चली जाती हैं, जिससे हमें खाना खाने में भी परेशानी होती है और घरों की सफाई गंदगी में बदल जाती है। उसके बाद 12 वर्षीय निशा ने कहा कि हम चाहते हैं कि यहां की गंदगी को साफ करवाया जाए और इस परेशानी को जल्द से जल्द दूर किया जाए। 13 वर्षीय रोहित ने बताया कि हम सभी बाल साथियों ने सफाई कर्मचारी से बहुत बार शिकायत भी की है और उन्हें बताया है कि हमारे यहां बहुत गंदगी और कूड़ा कचरा है तो उन्होंने भी हमारी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और वहां की गंदगी को साफ नहीं करवाया।

रोहित ने बताया कि गोविंद चौराहा में नगर निगम कार्यालय से कोई भी सुविधा प्राप्त नहीं होती है। क्योंकि हम बच्चों के साथ साथ यहां रहने वाले लोगों ने भी इस बारे में अधिकारियों से भी बात की थी पर इसके बाद भी कोई सुनवाई नहीं की गई। जिससे बच्चे परेशान हो रहें है और इस गंदगी को बर्दास्त कर रहे हैं। तब हम सभी बाल साथियों ने थक हार कर यह निर्णय लिया है कि अब हम स्वयं ही इस स्थान की सफाई करेंगे। इन सभी बाल साथियों ने इस स्थान की साफ सफाई करने का बीड़ा उठा लिया है।

इस समस्या को हल करने के लिए उन्होंने आस पास के सभी बाल साथियों के साथ मिलकर एक बैठक का आयोजन किया और इस बैठक में इस विषय पर विचार विमर्श किया। इसके बाद उन सभी बाल साथियों ने अपने हाथों से उस स्थान की रोज़ सफाई करना शुरू कर दी। वह सभी बच्चे इतनी मेहनत के साथ अपने हाथों से वहां फैली गंदगी को साफ करते हैं और कूड़ा कचरा उठाकर अपने सिर पर रखकर फेंकने जाते हैं। इस प्रकार बच्चों का यही प्रयास है कि वे वहां की गंदगी को किसी तरह कम कर सकें ताकि वे स्वच्छता से रह सकें, वहां खेल कूद सकें तथा पढ़ाई लिखाई कर सकें।

जशवंत (15 वर्ष)

स्कूल में प्रवेश पाकर खुश हुआ दिनेश

13 वर्षीय दिनेश झांसी के कॉन्टेक्ट प्वाइंट गोविंद चौराहा में अपने माता पिता के साथ रहता है। वह अपने पिता के साथ कबाड़ा बीनने का काम भी करने जाता है। वह दो ही भाई बहन हैं, जो अपने माता पिता के साथ पिछले कई वर्षों से झांसी में रह रहे हैं। दिनेश के घर की आर्थिक स्थिति ठीक ना होने के कारण वह पढ़ लिख नहीं पाया। लेकिन दिनेश को शुरू से ही पढ़ने का बहुत शौक था। जब वह दूसरे बच्चों को स्कूल जाते देखता था तो उसका मन भी करता था कि वह इनकी तरह स्कूल जा पाता। लेकिन उसे पता था कि उसके घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है कि वह अपना काम छोड़कर स्कूल पढ़ने जा सके। दिनेश यह भी सोचता था कि क्या वह ऐसा कर सकता है कि काम भी करे और अपनी पढ़ाई भी करे।

जब बढ़ते कदम के जिला सचिव 15 वर्षीय जशवंत ने दिनेश के माता पिता को यह जानकारी दी कि इस समय सभी स्कूलों में बच्चों के दाखिले हो रहे हैं और कोई भी अपने बच्चों का दाखिला सरकारी स्कूलों में करवा सकता है। साथ ही उन्हें यह भी बताया कि उनका बेटा पढ़ने में अच्छा है। वह स्कूल में पढ़ना चाहता है तो उसके माता पिता ने कहा कि हम दिनेश को स्कूल भेजने के लिए तैयार हैं पर हमारे बेटे का दाखिला कौन करवाएगा तो जशवंत ने बताया कि दिनेश का दाखिला अविनाश भैया करवा देंगे जो चेतना संस्था के कार्यकर्ता हैं। उसके बाद दिनेश के माता पिता से अविनाश भैया ने बात की और उन्हें दिनेश का दाखिला करवाने के लिए पूरी तरह तैयार किया। ताकि वह अपने बेटे का स्कूल में दाखिला होने के बाद रोज़ उसे स्कूल भेजें और उसकी पढ़ाई लिखाई में किसी भी तरह की बाधा ना डालें, जिससे वह स्कूल न जा पाए और उनसे कहा कि वह अपने बेटे को पढ़ने का समय भी दें।

उसके बाद दिनेश के माता पिता ने कहा की वह अपने बेटे को रोज़ स्कूल भेजेंगे। दिनेश का दाखिला सरकारी स्कूल के कक्षा एक में करवा दिया गया। अब दिनेश स्कूल जाने लगा है। उसका कहना है कि उसे स्कूल जाकर बहुत खुशी हो रही है। वह रोज़ सुबह उठकर पहले स्कूल जाता है और उसके बाद दोपहर में वह कबाड़ा बीनने का काम करता है, जिससे वह अपने घर की आर्थिक रूप से मदद पहुंचाने में अपने माता पिता की सहायता कर सके।

-जशवंत (15 वर्ष)

बच्चों की बैठक में बड़ी सीख

जब बढ़ते कदम संगठन के जिला सचिव 15 वर्षीय जशवंत झांसी के गढ़मऊ कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पहुंचे तो वहां पर जाकर सभी बच्चों को इकट्ठा किया और सभी बच्चों के साथ एक बैठक की। बैठक के दौरान 12 वर्षीय सोनू, जो अपने कॉन्टेक्ट प्वाइंट का लीडर है उसने सभी बच्चों का स्वागत किया और कहा कि आज हम सब बच्चे इस बैठक में अपनी समस्याओं पर चर्चा करेंगे और चर्चा के बाद अपनी समस्याओं को कैसे हल कर सकते हैं उसका समाधान निकालेंगे। उसके बाद सभी बच्चों ने अपनी समस्याओं को सभी के सामने रखा और उन पर बात की।

बातचीत के दौरान 12 वर्षीय सोनू ने बताया कि मैं अपने पिता के साथ काम करने जाता हूं। हमारे यहां गढ़मऊ के मोहल्ले में पहाड़ी इलाका है। इसकी वजह से हमारे यहां के नल में पानी नहीं आता। नल सूख जाते हैं। इस भरी धूप और गर्मी के चलते यहां बुरा हाल है। इस परेशानी की वजह से हम बच्चे गर्मी से परेशान होकर पास के एक तालाब में नहाने जाते हैं क्योंकि हमारे यहां पानी की समस्या बहुत ज़्यादा है। इसलिए सभी बच्चे उस तालाब में ही अपना नहाना धोना करते हैं। कुछ समय पहले की बात है कि 12 वर्षीय राधेश्याम, मिथुन और सोहना यह तीनों बाल साथी पानी ना होने के कारण तालाब में नहाने गए थे और मैं भी उनके साथ गया था। राधेश्याम जैसे ही उस तालाब के अन्दर नहाने के लिए गया तो वह नहाते नहाते गहराई की ओर बढ़ता गया। सभी बाल साथी नहाने के बाद कपड़े पहन कर अपने अपने घर जाने लगे। लेकिन राधेश्याम की तरफ जब हमने ध्यान दिया तो वह नहा रहा था उसे नहीं पता था कि वह पानी की गहराई में समाता जा रहा है। जब उसने पानी में अपने आप को बहता हुआ देखा तो उसने चिल्लाना शुरू कर दिया और वह मदद मांगने लगा। जब हम सभी को राधेश्याम के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई पड़ी तो पूरे मोहल्ले में शोर मच गया कि राधेश्याम पानी में डूब गया। यह सुनकर हमने तालाब के नज़दीक जाकर देखा तो वह सचमुच में डूब रहा था। सभी लोग वहां खड़े उसे डूबता देख रहे थे। लेकिन उसे निकालने के बारे में कोई कुछ नहीं कर रहा था। मैं यह सब देखकर उस पानी में कूद पड़ा और राधेश्याम को तालाब से बाहर निकालने का प्रयास करने लगा। बहुत परिश्रम करने के बाद मैंने राधेश्याम को तालाब से बाहर निकाल लिया और उसे बचा लिया। लेकिन यह तो हमारे यहां की रोज की समस्या है। उस दिन मैं राधेश्याम के साथ था तो मैंने उसे बचा लिया, लेकिन यदि कोई वहां न हो तो बच्चा जो वहां नहाने गया है वह तो डूब ही जाएगा।

सोनू की इस समस्या के बारे में जानने के बाद सभी बच्चों ने कहा कि तो फिर इस खतरे से निकलने के लिए क्या किया जाना चाहिए, जिससे हम बच्चे उस पानी की तरफ ना जाए। 12 वर्षीय हरशू ने कहा कि अगर हम सब बाल साथी वहां नहाने ना जाएं और अपने घर पर ही पानी भर कर नहाएं तो हमें देखकर बाकी के बाल साथी भी उस तालाब की ओर नहाने नहीं जाएंगे। इस प्रकार हम दूसरे बच्चों को उस तालाब में नहाने से रोक सकेंगे। सबसे पहले हमें खुद को ही सावधानी बरतनी होगी, उसके बाद हम इस समस्या से बच सकेंगे।

-जशवंत (15 वर्ष)

बेबसी के आंचल में पलता बचपन

14 वर्षीय सुमित झांसी में बसी एक बस्ती सखीपुरा का रहने वाला है। वह अपने माता पिता के साथ रहता है। सुमित की माता दिमागी तौर से पागल हैं और उसके पिता जी बहुत शराब पीते हैं। वह पिछले दो साल से बढ़ते कदम से जुड़ा हुआ है और संगठन का पुराना सदस्य है। सुमित को पढ़ने का बहुत शौक है। इसलिए वह पहले सखीपुरा के कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर पढ़ने के लिए आता था। लेकिन उसके पिता जी उसे पढ़ने को मना करते थे। जब भी वह पढ़ने के लिए कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर बैठता था तो उसके पिता जी उसे वहां से उठाकर ले जाते थे और काम पर भेज देते थे। सुमित ने धीरे धीरे कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर आना कम कर दिया है। अब वह काम करने लगा है और काम करके वह अपना घर का खर्च खुद से चलाता है। लेकिन सुमित के पिता को शराब पीने की बुरी लत है और वह सुमित के कमाए हुए पैसों से ही शराब पीते हैं। जो कुछ सुमित कमाता है उसके पिताजी उससे ले लेते हैं और उन पैसों से शराब पीकर आ जाते हैं। सुमित को रोज़ काम पर जाना पड़ता है, क्योंकि वह अकेला ही अपने घर का खर्चा पानी चला रहा है और उसके पिता जी कुछ काम नहीं करते, सिर्फ अपने बेटे के पैसों से शराब का सेवन करते हैं।

सुमित की माता की दिमागी हालत ठीक न होने के कारण वह अपनी माता का ख्याल भी रखता है और काम करने भी जाता है। जब सुमित के पिता जी शराब पीकर घर पर जाते हैं तो घर में हंगामा कर देते हैं और लड़ाई झगड़ा करते हैं तथा सुमित को मारते पीटते हैं। उसके साथ साथ वह उसकी माता को भी मारते हैं। यह सब देखकर सुमित को बहुत दुख होता है। सुमित जहां काम करता है उसके पिता जी उसके मालिक के घर जाकर सुमित के नाम से पैसे उधार ले आते हैं और सब पैसों की शराब पी लेते हैं। इस कारण सुमित के ऊपर बहुत कर्जा होता जा रहा है। सुमित सोच रहा है कि वह और ज़्यादा काम करे, जिससे उसके ऊपर जो कर्जा है वो खत्म हो जाए।

इतनी कम उम्र में सुमित अपने घर को संभाले हुए है। वह दिन भर तो काम करता है और शाम होने पर घर वापस आकर अपनी माता का ख्याल रखता है। यह सब देखकर बढ़ते कदम के रिपोर्टर 15 वर्षीय जशवंत ने जब सुमित से मुलाकात की तो सुमित ने अपने बारे में बताया और कहा कि मुझे पढ़ने का बहुत शौक है। मैं पढ़ना तो चाहता हूं पर क्या करू मैं चाहकर भी नहीं पढ़ सकता। क्योंकि अगर मैं पढ़ने गया तो मेरी माता का ख्याल कौन रखेगा और काम करने कौन जाएगा, जिससे मेरे घर का खर्चा चल सके। मैं इसी वजह से पढ़ने नहीं जा पा रहा हूं क्योंकि मैं बेबस हूं।

-जशवंत (15 वर्ष)

लापता बच्चों को ढूंढेगा 'खोया पाया' वेब पोर्टल

आपको जानकर हैरानी होगी कि पुलिस थानों में एक वर्ष में तकरीबन 70,000 गुमशुदा बच्चों की रिपोर्ट दर्ज की जाती हैं और उन्हें ढूंढा जाता है। गुमशुदा बच्चों के साल दर साल बढ़ते हुए ये आंकड़े सरकार के लिए बहुत चिंता का विषय है। इन सभी परिस्थितियों को देखते हुए और खोए या पाए गए बच्चों को तत्काल संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से महिल एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा केंद्रीय सूचना केंद्र (एनआईसी) के सहयोग से एक वेब पोर्टल ''खोया पाया'' बनाया गया है।

दिनांक 3 जून को महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती मेनका गांधी जी और केंद्रीय दूर संचार एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद जी द्वारा इस वेब पोर्टल की शुरूआत की गई। इस वेब पोर्टल में गुमशुदा बच्चों और ऐसे गुमशुदा बच्चे जो कहीं देखे या पाए गए हैं, कार्यक्रम का सीधा प्रसारण वेब कास्टिंग के जरिए किया जाएगा। यह प्रसारण केंद्र सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की वेबसाइट www.wcd.nic.in पर खोया पाया कैप्शन के साथ व्हाट्स न्यूज के अंतर्गत देखा जा सकेगा। इसके अलावा यह प्रसारण इस विभाग के फेसबुक और ट्वीटर एकाउंट पर भी देखा जा सकेगा।

खोया पाया वेब पोर्टल के तहत

* गुमशुदा और पाए गए बालकों की तुरंत रिपोर्टिंग का प्रावधान है।

* साइट आधारित जानकारियों के माध्यम से गुमशुदा बालकों का पता लगाना आसान है।

* यह नागरिकों के साथ जुड़े हुए बालकों के बारे में जानकारी प्रदान करने को प्रोत्साहित करता है।

* नागरिक पाए गए बालकों के बारे में जानकारी अपलोड कर सकते हैं।

* पाए गए बालकों के साथ गुमशुदा बालकों के शारीरिक लक्षणों का मिलान कर सकते हैं।

* खोए हुए या कहीं देखे गए बालकों की सूचना khoyapaya.gov.in पर अपलोड की जा सकती है।

खोया पाया वेब पोर्टल एक सशक्त मंच है, जहां नागरिक गुमशुदा बालकों तथा उनके पता के ठिकानों के बारे में रिपोर्ट दे सकते हैं। पाए गए बालकों के बारे में भी रिपोर्ट दी जा सकती है। ये रिपोर्ट फोटोग्राफ, वीडियो तथा संचारण के अन्य साधनों और खोया पाया साइट पर जानकारी अपलोड करने के माध्यम से दी जा सकती है।

-शन्नो (19 वर्ष)

शराबी माता पिता पढ़ने नहीं देते अपने बच्चों को

14 वर्षीय आकाश पश्चिमी दिल्ली के वाल्मीकि कैम्प में अपने माता पिता के साथ रहता है। वह दो भाई बहन हैं। वह कबाड़ा बीनने का काम करता है, जिससे वह अपने घर का खर्च चलाता है। लेकिन उसके माता पिता कुछ काम नहीं करते, बल्कि दोनों मिलकर शराब पीते हैं और वह कबाड़ा बीनकर जो पैसा कमाता है वह पैसे उसके माता पिता उससे छीन लेते हैं और उसकी शराब पी लेते हैं। आकाश अपने माता पिता के इन कारनामों से बहुत दुखी होता है।

वह गर्मी हो या सर्दी दिन भर इधर उधर घूम घूम कर कबाड़ा बीनकर मेहनत से ये पैसे कमाता है और उसके माता पिता एक झटके में उसकी मेहनत की कमाई को शराब में उड़ा देते हैं। अब वह इन सब से बहुत परेशान हो चुका है क्योंकि अगर वह अपने पिता को पैसे नहीं देता है तो उसके पिता उससे झगड़ा करते हैं और उससे गाली गलौच करते हैं।

उसके माता पिता के इस रवैये से वहां रहने वाले लोग भी उन्हें भला बुरा कहते हैं। उसकी बहन जो 16 वर्ष की है, वह भी कोठी में काम करने जाती है ताकि वह दोनों मिलकर अपनी गुजर बसर कर सकें। लेकिन आकाश को कबाड़ा बीनना अच्छा नहीं लगता। वह पढ़ना चाहता है और आगे बढ़ना चाहता है। पर उसे न तो कोई सुविधा प्राप्त हो पा रही है और न ही कोई उसकी मदद करने वाला है।

वह चाहता है कि वह शेल्टर होम जाकर अपनी पढ़ाई करे, लेकिन उसके पिता उसे पढ़ने के लिए नहीं भेजते हैं। इसी बीच बढ़ते कदम के राज्य सचिव विकास और जिला अध्यक्ष चांदनी ने उससे मुलाकात की। वे दोनों उसके माता पिता से मिले और आकाश की पढ़ाई के बारे में बात की। लेकिन उसके पिता जी ने एकदम मना कर दिया और कहा कि हम अपने बच्चे को पढ़ने के लिए नहीं भेजेंगे। आकाश हमारे साथ रहकर काम करेगा। वह कहीं नहीं जाएगा पढ़ने लिखने के लिए तो बिल्कुल भी नहीं।

यह सुनकर आकाश बहुत परेशान हो गया और अपने काम पर चला गया। आकाश चाहता है कि वह एक अच्छे सेन्टर में अपनी पढ़ाई लिखाई करे और आगे बढ़े। लेकिन यह मौका शायद उसे नहीं मिल पाएगा क्योंकि उसके माता पिता तो शराब का सेवन करते हैं और उसकी बहन भी काम करती है। इसकी वजह से वह अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाएगा। उसके मन में एक आस है कि वह एक दिन ज़रूर पढ़ लिख कर आगे बढ़ेगा।

-चांदनी (15 वर्ष)

सरकार का नया कानून और बच्चों की राय

बढ़ते कदम के सदस्यों को जब यह पता चला कि सरकार ने 14 साल के बच्चों को काम करने की अनुमति दे दी है तो इस मुद्दे पर बाल सदस्यों की एक बैठक बुलाई गई और इस कानून के बारे में चर्चा की गई। बैठक में बाल साथियों से पूछा गया कि वह इस कानून से सहमत हैं या नहीं।

15 वर्षीय आकाश मार्केट में नाड़े बेचने काम करता है। बैठक के दौरान आकाश ने कहा कि मैं इस कानून से सहमत नहीं हूं, क्योंकि हमारी सरकार ने इससे पहले कहा था कि कोई भी 14 साल के बच्चे से अगर किसी भी तरह का काम करवाता है तो वह कानूनन अपराध होगा तथा उसे सजा हो सकती है। इतने सख्त कानून के बाद भी बच्चों से भरपूर काम करवाया जा रहा था। और अब तो हमारी सरकार ने 14 साल के बच्चों को काम करने की अनुमति दे दी है, तो ऐसे में बच्चों से और भी ज़्यादा काम करवाया जा सकता है, जिससें बच्चे और भी ज़्यादा संख्या में शोषित हो सकते हैं। सरकार के इस नए कानून से गांव में रहने वाले बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

14 वर्षीय नूराबीन ने कहा की बच्चों से तो अभी भी काम करवाया जा रहा है और अब इस नए कानून के आ जाने से बच्चे ज़्यादा संख्या में काम करने लगेंगे क्योंकि माता पिता को अपने बच्चों से काम करवाने का एक बहाना मिल गया कि जो बच्चा स्कूल जाएगा वह काम कर सकता है। तो अब सभी माता पिता अपने बच्चो का स्कूल में दाखिला तो करवा देंगे लेकिन पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि अपने बच्चों से काम करवाने के लिए, ताकि उन्हें काम पर रखकर पैसा कमा सकें।

16 वर्षीय मोन्टी ने कहा कि अगर बच्चा आधे दिन स्कूल जाएगा और आधे दिन काम करेगा तो वह अपने स्कूल का होम वर्क कैसे कर सकेगा। उसका ध्यान काम की ओर ज़्यादा रहेगा, क्योंकि बच्चे को पैसा कमाने का लालच बढ़ जाएगा और फिर वह स्कूल नहीं जाएगा। उसने कहा कि मैं पहले स्कूल जाता था, लेकिन वहां ठीक से पढ़ाई नहीं होती थी, तो मैंने स्कूल जाना छोड़ दिया और काम करने लगा उसका कहना है कि मैं पढ़ने के लिए तैयार हूं अगर मुझे अच्छा स्कूल मिले।

15 वर्षीय ज्योति ने कहा कि वह सरकार के इस नए कानून से सहमत नहीं है, क्योंकि इस कानून द्वारा लोगों को बच्चों से काम करवाने की पूरी पूरी छूट मिल जाएगी। जो माता पिता अपने बच्चों से भीख मंगवाते हैं, बच्चों के कमाए हुए पैसों से शराब पीते हैं। उनको एक तरह की शक्ती मिल जाएगी बच्चों से काम करवाने की। मैं चाहती हूं कि ऐसा ना हो और जो माता पिता अपने बच्चों से काम करवाते हैं उन्हें सुधारा जाए तथा जिन माता पिता के पास कुछ काम नहीं हैं उन्हें सरकार द्वारा कोई काम दिया जाए, जिससे बच्चों को काम नहीं करना पड़ेगा, साथ ही बच्चे स्कूल भी जा सकेंगे।

17 वर्षीय चांदनी ने बताया कि नोएडा में अब किसी भी दुकान, ढाबे, शोरूम या अन्य किसी भी तरह के काम पर बच्चों को नहीं रखते थे, क्योंकि उन्हें पता था कि 14 साल के बच्चे को काम पर रखना कानूनी अपराध है। लेकिन अब इस नए कानून के बारे में जानने के बाद उन्हें 14 साल के बच्चों को काम पर रखने की पूरी छूट मिल जाएगी। क्योंकि उन्हें पता हो जाएगा कि अब बच्चों को काम पर रखने से उन्हें कानून भी नहीं रोकेगा और वह इस कानून का ज़्यादा फायदा उठा सकेंगे। क्योंकि वह बच्चों से ज़्यादा पैसे कमाने में सक्षम हों सकेंगे इस तरह से तो उन्हें पूरी खुली छूट मिल जाएगी, इसलिए मैं इस नए कानून से सहमत नहीं हूं। 16 वर्षीय सौरव ने कहा कि हमारे देश में ऐसे दो करोड़ से भी ज़्यादा बच्चे हैं, जो स्कूल नहीं जाते हम चाहते हैं कि पहले इन सभी बच्चों को स्कूल भेजा जाए और जो बच्चे काम कर रहें हैं, उन्हें काम करने से रोका जाए ना कि उन्हें काम करने को कहा जाए। क्योंकि 14 साल के बच्चे को पढ़ाई करनी चाहिए। हमारी सरकार को ऐसी योजना बनानी चाहिए, जिसमें बच्चों के घरों की स्थिति सुधारने के लिए उनके माता पिता को काम दिलाया जाए और उस काम के इतने पैसे दिए जाएं, जिससे कि उनके घरों का खर्च अच्छी तरह से चल सकें। साथ में बच्चों की शिक्षा का भी पूरा पूरा ध्यान रखा जाए और उन्हें रोका जाए जो कि बच्चों से काम करवाते हैं और उनसे भीख मंगवातें हैं। इस तरह हम बच्चों को काम भी नहीं करना पड़ेगा और उनका शिक्षा से जुड़ाव बना रहेगा।

-मोंटी (16 वर्ष)

किशोरों की उम्र घटाने के पक्ष में नहीं सामाजिक संस्थाएं

किशोर न्याय बिल को लेकर मंथन जारी

किशोर न्याय बिल में किशोरों की उम्र कम करने को लेकर सामाजिक संस्थाओं ने गहरी चिंता जताई है। सामाजिक कार्यकर्ताओं का मानना है कि सरकार द्वारा इस बिल को पास करने में बहुत जल्दी दिखाई गई है और इस पर पूर्ण रूप से विचार विमर्श किए बिना ही किशोर न्याय बिल 2014 को सदन में पास कर दिया गया है। इस नए बिल में...

1. समानता के अधिकार का उल्लंघन : 16 से 18 वर्ष के बच्चों की न्यूरोबायलॉजिकल संरचना एवं प्रक्रिया वयस्कों के समान नहीं होती, इसलिए उन्हें वयस्कों की तरह ही समझना संविधान की धारा 14 एवं 15 (3) के तहत उल्लंघन करना होगा।

2. नए प्रावधानों के अनुसार किशोर न्याय बोर्ड को किशोरों या वयस्कों की मानसिक अवस्था के अनुसार फैसला लेना संभव नहीं है, क्योंकि ऐसा कर पाना विज्ञान की सीमा से परे है।

3. सरकार को चाहिए कि वो अपराध में लिप्त किशोरों के पुर्नवास के तरीकों और उनकी खामियों पर ज्यादा जोर दें, जिसकी अनुपस्थिति में किशोर मुख्यधारा में नहीं आ पाते।

किशोर न्याय बिल पर अपने विचार व्यक्त करते हुए किशोर न्याय बोर्ड (जेजेबी) के वकील श्री अनंत अस्थाना जी ने सवाल उठाया कि, ''आखिर इस कानून में बसी मानवीय विचारधारा को क्यों बदला जा रहा है। इस कानून का पूरा आधार सुधारात्मक था, न कि दंडात्मक।''

बालकनामा अखबार की सलाहकार शन्नो कहती हैं कि, ''इस देश में ऐसे लाखों गरीब बच्चे हैं जो स्कूल से बाहर हैं और सड़कों पर जीवनयापन करके विषम परिस्थितियों में रहने को मजबूर हैं। ऐसे बच्चे लचर कानून व्यवस्था तंत्र के शिकार हो सकते हैं।''

श्री संजय गुप्ता ने बताया कि, ''प्रो चाइल्ड इस हेतु देश व्यापी अभियान चलाएगा और सरकार से लगातार निवेदन करेगा कि वे किशोरों के प्रति देश हित में सहानुभूतिपूर्ण रवैया अपनाएं।''

-शन्नो (19 वर्ष)

आइए जानते हैं चाइल्ड हेल्पलाइन नंबरों के बारे में

चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 : चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर पर फोन करके आप किसी भी समय मुसीबत में फंसे बच्चे की मदद कर सकते हैं। यह सेवा 24 घंटे उपलब्ध है और यह निःशुल्क सेवा है।

पुलिस हेल्पलाइन नंबर 100 : पुलिस हेल्पलाइन नंबर एक निःशुल्क सेवा है। जिस पर आप किसी भी समय फोन करके मदद ले सकते हैं।

संपादक-मंडल : शन्नो, चांदनी, ज्योति, पूनम, जशवंत, पूजा, मोंटी और सौरव

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है। आर्थिक सहयोग : चेतना इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं